होली, नवसंवत्सर, आर्यसमाज स्थापना दिवस
एवं राम नवमी की हार्दिक शुभकामनाएँ

ओ३म्

वेद एवं विज्ञान आधारित अध्यात्म व मानव कल्याण
के लिए समर्पित मासिक पत्रिका

अध्यात्म पथ

वर्ष-17 अंक -178-179 मार्च-अप्रैल-2023 मूल्य : 10/- प्रति

200वीं
सदैव सत्य
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

सुख समृद्धि और स्वास्थ्य हो, नये वर्ष के साथ।
नित नूतन उत्कर्ष हो, वरदानों का हाथ।।
ईश्वर के तप से हुआ, संवत्सर का जन्म।
रात दिवस ऋतुएं हुई, अर्णवादि्र उत्पन्न।।
वैर त्याग सबसे करो, प्रेम-पूर्ण व्यवहार।
भेद भाव को भूलकर, चल होली आचार।।
ऋषिवर के उपकार से, फूला आर्यसमाज।
सकल विश्व में धूम है, किये मनुज हित काज।।

प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान, यशस्वी लेखक एवं मानव कल्याण में संलग्न आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के दिल्ली, मुरादाबाद के कार्यक्रम की सचित्र झलकियाँ

विश्व में सर्वाधिक सुंदर, सुसज्जित रुप में आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकास पुरी, नई दिल्ली को प्रथम स्थान प्राप्त, प्रशस्ति पत्र एवं 51 हजार की सम्मान राशि प्राप्त करते हुए समाज के पदाधिकारीगण

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकास पुरी,में लोकप्रिय सांसद श्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा जी को विशिष्ट मानव रत्न सम्मान से सम्मानित करते हुए श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी एवं समाज के महामंत्री श्री डालेश त्यागी जी

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित ऐतिहासिक आर्यसमाज मंडीबांस, मुरादाबाद में वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद शतक परायण महायज्ञ करते हुए श्रद्धालु आर्यजन

विश्व प्रसिद्ध आगरा के ताज महल में यशस्वी लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी

श्री कृष्ण जन्मभूमि, मथुरा में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी साथ में श्री नरेश वर्मा 'धुरंधर' जी, श्रीमती कल्याणी वर्मा जी, आ० शाश्वत एवं आयुष्मती प्रज्ञा

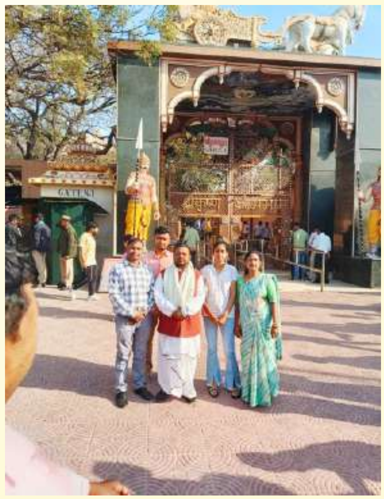

वेद एवं विज्ञान आधारित अध्यात्म व मानव कल्याण के लिए समर्पित मासिक पत्रिका

अध्यात्म पथ

वर्ष-17 अंक -178-179 मार्च-अप्रैल 2023

प्रेरणास्रोत
स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती
स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती
पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह जी शशि
डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया, डी.लिट्
स्व. श्री विद्यासागर नांगिया

प्रधान सम्पादक
चन्द्रशेखर शास्त्री

प्रबन्ध सम्पादक
अश्विनी कुमार नांगिया

साहित्य सम्पादक
श्री ओम सपरा

सह-सम्पादक
श्रीमती पूनम नांगिया
श्री सूर्यकान्त मिश्रा
डॉ. पूनम सुनेजा

परामर्शदाता
डॉ. पुष्पलता वर्मा, डॉ. अनिल राय
श्री अशोक सुनेजा, श्री यशपाल आर्य

अध्यात्म पथ (मासिक)
WZ-97, सुन्दर पैलेस, ज्वाला हेड़ी मार्केट,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063
दूरभाष: 42345474, 9810084806
E-mail : adhyatmapath@yahoo.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक चन्द्रशेखर शास्त्री द्वारा एक्स्पो प्रिंट एण्ड मीडिया प्रा0 लि0, 97/12,ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63 से मुद्रित तथा अध्यात्म पथ कार्यालय : WZ-97, सुन्दर पैलेस, ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63 से प्रकाशित

अनुक्रम

विषय / विशेषांक	पृष्ठ
अध्यात्म अमृत-वेद वाणी, स्वस्थ जीवन जीने की कला	4
सम्पादकीय : मानवीय मूल्यों के उत्थान में समर्पित है- आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री	5-6
अकेले और निराश क्यों हैं हमारे बुजुर्ग	7-8
परमात्मा की विद्यमानता	9-10
वेदों में विज्ञान का उद्घोष	11-12
पग-पग सजग बढ़ आगे, स्वागत को संसार खड़ा	13-14
मात्र अच्छा होना नहीं, अनिवार्य है समाज व राष्ट्र के लिए सदैव सक्रिय रहना भी	15-16
अनादि व अनंत काल तक रहने वाला हमारा हितैषि सखा है ईश्वर	17-18
कोरोना से लड़ेगा-आयुर्वेदिक काढ़ा गिलोय, पिपली, अश्वगंधा, मुलहटी	19
निरोगी काया में ही सुख	20-21
समाचार दर्पण-अंकिता चौधरी को सम्मानित किया गया	21
पहला सुख निरोगी काया-आधुनिकता का दुष्प्रभाव : यूरिक एसिड	22
हास्य प्रसंग-हंसना भी जरूरी है सेहत के लिए	23
भजनवर्षा-वो टंकारे वाला, पहचान	24
भव्य विशेषांक हेतु विज्ञापन की अपील	25
आर्य समाजों एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं से अपील	26
अध्यात्म पथ सदस्यता आवेदन पत्र	26

कुल पृष्ठ संख्या 28 कवर सहित

समस्त पत्र व्यवहार हेतु नीचे लिखे पते पर ही संपर्क करें।
आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
(प्रधान संपादक-अध्यात्म पथ)
फ्लैट नं.-C-1, पूर्ति अपार्टमेंट (एफ ब्लाक)
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 मो. 9810084806
E-mail : acharya_chandrashekhar@yahoo.com

लेखकवृंद-रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर:

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ नं-2	:	3100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ नं-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

अध्यात्म पथ में प्रकाशित रचना में व्यक्त विचार, रचनाकार के अपने विचार हैं।
सम्पादक मण्डल का उन विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। न्यायक्षेत्र दिल्ली रहेगा।

अध्यात्म अमृत — वेदवाणी

ओ३म् प्रति पन्थामपद्माहि स्वस्ति गामनेहसम्।
येन विश्वाः परि द्विषा वृणक्ति विन्दते बसु॥

मनुष्यों को उचित है कि द्वेषादि त्याग, विद्यादि धन की प्राप्ति और धर्ममार्ग के प्रकाश के लिए ईश्वर की प्रार्थना, धर्म और धार्मिक विद्वानों की सेवा निरन्तर करें।

स्वस्थ्य जीवन जीने की कला

धर्मार्थ काममोक्षाणां शरीरं साधनं यतः।
सर्वकार्येष्वन्रङ्ग शरीरस्य हि रक्षणम्॥

धर्म, अर्थ, काम मोक्ष ये चार पुरुषार्थ हैं इन सबका मुख्य साधन शरीर है, शरीर की रक्षा करना आवश्यक है। आयुर्वेद का मुख्य प्रयोजन स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करना है।

जल का हमारे दैनिक जीवन में बड़ा महत्व है

➲ बुखार, सुजाक, लू लगने पर, रक्त चाप, हृदय की धड़कन, कब्ज, पेट में जलन और पेशाब बन्द की बीमारियों में पानी का उपयोग करना लाभदायक होता है।

➲ जो मनुष्य प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व उठकर पानी पीता है जो कि तांबा पात्र में रखा है, नित्य नियम से बासी पानी पीता रहे उसे बबासीर, संग्रहणी, ज्वर, मूत्राघात, गर्णरोग, गले के रोग, कटिशूल इत्यादि नहीं सताते हैं।

पेट की बीमारी की सरल इलाज

तुलसी की 4 पत्ती लेकर टुकड़े-टुकड़े कर ग्रहण करें ऊपर से पानी पीयें यह नियमपूर्वक रोजाना करने से पेट रोग दूर होते हैं।

घृत के गुणों का वर्णन

➲ विपाके मधुरं शीतं वात पित्त विषापहम्- गाय के दूध का घृत मधुर, शान्ति कारक, वात, पित्त नाशक, आँखों के लाभकारी अतिश्रेष्ठ बलकारक गुणों से भरपूर है।

➲ बकरी के दूध का घी अग्नि दीपक, बलवर्धक, कास श्वास क्षयरोगियों के लिए हितकारी है।

बबासीर की घरेलू औषधि

अंजीर 100 ग्राम लेकर पानी में भिगोकर शाम और प्रातःकाल खाने से बवासीर रोग में राहत मिलेगी।

मिरगी को दूर करने के उपाय

➲ ढाक (पलास) की जड़ पानी में पीसकर 2-3 बूंद नाक में टपकाने से मिरगी रोग नष्ट होते हैं। 10-15 दिन प्रयोग करें।

➲ शरीफा के पत्तों का रस नाक में डालने से मिरगी दूर होती है।

'अध्यात्म पथ' के आजीवन सदस्यों की सेवा में

वैदिक विचारधारा की अत्यन्त लोकप्रिय मासिक पत्रिका 'अध्यात्म पथ' का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है। किन्तु अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। अध्यात्म पथ आपकी अपनी पत्रिका है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अतः ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1100/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से अध्यात्म पथ भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया आपना नाम पता पिन कोड, सदस्य संख्या तथा मोबाइल नं. अवश्य लिखें।

ड्राफ्ट/चैक/मनीऑर्डर 'अध्यात्म पथ' के नाम से अध्यात्म पथ सम्पादकीय कार्यालय, फ्लैट नं.-सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट (एफ-ब्लाक) विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 के पते पर भेजें।

अश्विनी कुमार नांगिया, प्रबंध संपादक

महानता के दो आधार –
सदा जीवन, उच्च विचार

सम्पादकीय... ✍

-भजन संध्या एवं वैदिक सत्संग करके मनाया गया आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री का जन्म उत्सव-

मानवीय मूल्यों के उत्थान में समर्पित हैं आचार्य चंद्रशेखर शास्त्रीः स्वामी आदित्यवेश

अध्यात्म पथ पंजीकृत मासिक पत्रिका के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान एवं अध्यात्म पथ पत्रिका के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी का जन्म उत्सव आनलाईन जूम के माध्यम से विशाल भजन संध्या व वैदिक सत्संग के रुप में मनाया गया।

आर्यजगत के युवा संन्यासी, ओजस्वी वक्ता एवं गुरुकुल धीरनवास हिसार के अध्यक्ष स्वामी आदित्यवेश जी ने आचार्य जी के सरल, सौम्य और निर्मल भाव से समाज व विश्व के लिए समर्पित व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य जी के कार्यों से विश्व बदल रहा है। देश विदेशों में चेतना दृष्टिगोचर हो रही है, समाज में परिवारों में परिवर्तन दीख रहा है, ऋषि की वैदिक विचारधारा जनसाधारण जन सामान्य तक पहुंच रही है, देश विदेश में घर बैठे हमें संस्कार व संस्कृति का बोध होने लगा है, आपके लेखन ने राष्ट्र को नई ज्योति प्रदान की है। उनके जन्म दिवस पर कोटिशः अभिनंदन करता हूं एवं शुभकामनाएं देता हूं।

आयोजन के प्रारंभ में स्वस्तिवाचन व स्वागत गीत की प्रस्तुति आर्यजगत की सुविख्यात विदुषी आचार्या प्रीति एवं कन्या गुरूकुल लोवांकला की छात्राओं ने अपनी प्रस्तुति से परिपूर्ण शुभकामनाएं प्रदान की थी, इसके उपरांत द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरूकुल देहरादून की वैदुष्य से परिपूर्ण विदुषी वहन आचार्या श्रद्धांजलि ने आयुष्काम मंत्रों का वाचन करके आचार्य जी को स्वस्थ दीर्घ जीवन व राष्ट्र व समाज के लिए समर्पित व्यक्तित्व को प्रखर तेजस्वी बनाने के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. डॉ. अनिल राय, डीन, इन्टर नेशनल रिलेशन, दिल्ली विश्वविद्यालय ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रेरणादायक उद्बोधन से परिपूर्ण शुभकामनाएं प्रदान की। उन्होंने कहा कि आचार्य जी प्रतिभा एवं मानवता के अनुपम संगम हैं। आचार्य जी ने कनाडा में 2 बार 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ करा कर ऐतिहासिक कार्य किया है।

इस आयोजन की अध्यक्षता कर रहे पूर्व मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट एवं वरिष्ठ साहित्यकार ओम सपरा जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा की ऋषि की वैदिक विचारधारा को जनसामान्य तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के द्वारा सर्वत्र दीख रहा है, यदि यह कहा जाये कि वह वैदिक चिन्तन के संवाहक है तो अतिशयोक्ति न होगी। देश के कोने–कोने में विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा आपने घर–घर वेद ज्योति प्रकाशमान कर रहें है। सभा में वक्ताओं ने सरल रूचिकर व आत्मसात करने वाले व्याख्यानों से लाभान्वित किया। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के जीवन का प्रत्येक पल उस महान ऋषि की परिकल्पना को साकार करने में सफल हो रहा है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी आचार्य प्रवर को जन्म दिवस पर राष्ट्राभिनंदन करते हुए हम सब गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय गीतकार डॉ. जय सिंह आर्य, कनाडा से श्रीमती सरोजिनी जौहर, आस्ट्रेलिया से श्रीमती प्रेम हंस ने काव्य के मनोरम संगम से आचार्य प्रवर को गौरवान्वित किया। गीत–संगीत के हृदय स्पर्शी–वातावरण में गायक कलाकार के रूप में भजन सम्राट श्री नरेन्द्र आर्य सुमन, अन्तर्राष्ट्रीय भजनोपदेशिका श्रीमती कविता आर्या, श्री जितेन्द्र प्रभाकर सरल, पं रमेश चंद्र कौशिक, श्री नरेश वर्मा धुरंधर, साईं नूपुर नांगिया

आदि ने भजन गीतों से आचार्य जी के व्यक्तित्व को समाज के लिए समर्पित जीवन एवं देश व समाज के लिए आर्य समाज के उनके योगदान पर मधुर संगीत व कण्ठ से मन्त्रमुग्ध कर दिया । शुभकामनाओं के सरल उद्बोधन से बंगलौर से सारस्वत अतिथि एस पी कुमार फकीरे दयानंद ने मानवीय मूल्यों के उत्थान में समर्पित व्यक्तित्व आचार्य जी पर विस्तार से चर्चा करते हुए उनके महत्वपूर्ण कार्यों को समाज के लिए समर्पित किया। हरियाणा से सारस्वत अतिथि डा. राजन मान जी ने उनके कृतित्व पर प्रेरणादायक उद्धरण देते हुवे प्रकाश डाला।

छत्तीसगढ़ से डा. अजय आर्य जी ने शास्त्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि करोना के संक्रमण ने जीवन की गति थाम दी थी, सब कुछ स्तब्ध होकर रुक गया था। रुकावट के उस दौर में भी आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी न रुके न थके। इनके ब्रह्मत्व में 20 लाख आहुतियों के माध्यम से 1 माह तक महामृत्युंजय महायज्ञ का ऑनलाइन भव्य आयोजन हुआ। जिसमें दिल्ली, मुंबई, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश, गुजरात, झारखंड, आंध्रप्रदेश, हिमाचल, उत्तराखंड आदि और अमेरिका, कनाडा, मॉरीशस, दुबई, लंदन, ऑस्ट्रेलिया, ताइवान आदि 12 देशों के लोगों ने यज्ञ में आहुति देकर पुण्य प्राप्त किया। मैं भी इस अनुष्ठान का हिस्सा बनकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता हूं।

हिंदी सलाहकार समिति, भारत सरकार के पूर्व सदस्य व आर्यजगत के सुविख्यात विद्वान, लेखक बरेली उत्तरप्रदेश के आचार्य डा0 श्वेत केतु शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य जी की वैदिक सेवा में व वैदुष्य समाज के लिए अनुकरणीय है, उनका व्यक्तित्व समाज सुधारक, राष्ट्र को गौरवान्वित करने वाला है, सरल व्यक्तित्व का धनी, तन्मयता से निर्लिप्त भाव से परिपूर्ण तथा समाज के लिए समर्पित है। आपके व्याख्यानों से न जाने कितने परिवारों को देश व विदेश में वैदिक संस्कृति व विचारधारा से प्रभावित किया है और दिनोदिन उस ऋषि के कार्यों को जन सामान्य तक पहुंचाने में तत्परता से लगे हैं। आपके लेख विश्व में वैदिक पताका फहराकर विश्व निर्माता के रूप में कार्य कर रहे है। लोकप्रिय निगम पार्षद श्री यशपाल आर्य जी ने आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि आचार्य जी पूरे विश्व में वेदों का डंका बजाते हुए 385 वेबिनार पूर्ण कर चुके हैं। अब भी यह कार्यक्रम चल रहा हैं। आचार्य जी ने कोरोना काल में **जीवन और मृत्यु के बीच अमृत की तलाश, गायत्री साधना के दिव्य सूत्र, आओ सीखे जीवन जीने की कला** इन तीन पुस्तकों को लिखकर, निशुल्क वितरण कर महान पुण्य का कार्य किया है। इन्ही की प्रेरणा से मैं महर्षि दयानंद पार्क, स्वामी श्रद्धानंद पार्क आदि महापुरुषों के नाम से बड़े बड़े का पार्कों का निर्माण कर पाया। वे निरंतर अध्यात्म एवं समाज सेवा में संलग्न हैं। प्रिं. अरूण आर्य, श्री यशपाल आर्य, श्री अशोक सुनेजा, श्री अश्विनी नांगिया, श्री सुरिन्द्र चौधरी, श्रीमती संतोष नंदवानी, डॉ. श्रीमती पूनम सुनेजा, श्रीमती पूनम नांगिया जी ने इस भव्य कार्यक्रम का सफल आयोजन किया।

अन्त में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने आन लाईन जूम से जुड़े सभी अतिथियों एवं सभी आत्मीय स्वजनों, आर्यजनों का आभार व धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि आपके मार्ग में चाहे गुलाब के फूल आएं, चाहे कांटे, चाहे झंझावात उठे अथवा हिमपात होने लगे, लेकिन बढ़ते चलो। हम जितना भी जी सकें अच्छी तरह से जिएं। लोगों के साथ जिएं। लोगों के लिए जिएं। लोग हमारे लिए जिएं। जिंदगी ऐसे जियो कि 'कोई हंसे तो आपकी वजह से हंसे, आप पर नहीं और कोई रोए तो आपके लिए रोए, आपकी वजह से नहीं।' इस कार्यक्रम में श्री रामपाल शास्त्री, डॉ धर्मवीर सेठी, आचार्य जयवीर वैदिक, श्री तुलसीदास नंदवानी, श्रीमती कुसुम भंडारी, श्रीमती ईश्वर देवी, श्री भारत सचदेवा, श्रीमती मोहिनी देवी, श्रीमती मधु कुमार, श्री किशोर आर्य, श्री सत्यपाल वत्स, श्रीमती दमयंती गुप्ता, श्रीमती गीता शर्मा, श्रीमती उषा सिडाना आदि देश विदेश के गणमान्य महानुभाव बहुत बड़ी संख्या में सम्मिलित थे।

–अश्विनी कुमार नांगिया

अकेले और निराश क्यों हैं हमारे बुजुर्ग

- के.एल. सचदेवा

कली से फूल, फूल से फल, फल का पक कर झड़ जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। केवल पेड़- पौधे और पशु ही नहीं मनुष्य भी प्रकृति के इस नियम से बंधे हैं। लेकिन स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार से मनुष्य की औसत आयु में वृद्धि हो रही है। इससे बूढ़ों की संख्या भी बढ़ रही है। यद्यपि, इस वय में शारीरिक क्षमताओं का क्षय होता है, परंतु शरीर के प्रति भावनात्मक लगाव बना रहता है। शारीरिक दुर्बलता, क्षीण याददाश्त, अनिद्रा, स्वजनों की ओर से निरन्तर उपेक्षा, आपसी सौहार्द में गिरावट, छोटी-छोटी बातों पर पारिवारिक कलह, निराशाएं, अकेलापन जैसी समस्यायें, वृद्धावस्था को बोझिल बना देती हैं।

आज का भारत युवाओं का देश कहा जाता है परंतु आने वाले दशकों में बहुत संभव है कि बहुमत वृद्धों का हो। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 60 वर्ष और उससे अधिक उम्र के 104 करोड़ बुज़ुर्ग नागरिक थे। यह संख्या लगातार बढ़ रही है लेकिन परिवार के स्तर पर उन्हें सुरक्षा और सम्मान देने तथा सरकार के स्तर पर पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध कराने में कोताही बरती जा रही है। हाल ही जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि देश के बहुत बड़ी संख्या में वृद्धजन अकेलेपन और निराशा से भरा जीवन जीते हैं। ये बुजुर्ग अपने चहूं ओर बढ़ रहे अपराधों से भयभीत रहते हैं। देश के लगभग तीन चौथाई बुजुर्ग ऐसे हैं जो लोकलाज के नाम पर सब सहते हैं। वे ऐसे स्थान पर जाना तो चाहते हैं जहां उन्हें आवश्यक सेवाएं यथा, बेहतर निवास, अस्पताल, बैंकिंग, रेस्टोरेंट्स और हाउसकीपिंग उपलब्ध हो लेकिन ऐसी सुविधाएं है कितनी और कहां ? राजकीय सेवा से निवृत्त को पेंशन तथा स्वास्थ्य सुविधाएं मिलती हैं लेकिन ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम हैं। ऐसे बुजुर्ग बड़ी संख्या में हैं जो आर्थिक कारणों से काम करने को विवश हैं।

पिछले दिनों एक बहुचर्चित संस्थान द्वारा आयोजित वरिष्ठ नागरिक सम्मान दिवस समारोह में आमंत्रित था। क्षेत्र अपेक्षाकृत संपन्न था इसलिए सभी साफ सुथरे कपड़ों, जूतों में तो जरूर दिखाई दिये लेकिन उनकी बुझी हुई आंखें कुछ और कहानी बयां कर रही थी। कार्यक्रम में बुजुर्गो को सम्मान देने की बड़ी-बड़ी बातें हुई। युवा पीढ़ी को उसके कर्तव्य याद दिलाये गये लेकिन अफसोस की खचाखच भरे सभागार में एक भी युवा नहीं था। जाहिर है सभी वरिष्ठ नागरिक अकेले आये होंगे अथवा उन्हें कोई छोड़ गया होगा। महानगरों के पार्को में भी दिनभर बड़ी संख्या में वरिष्ठ नागरिक दिखाई देते हैं। सर्दी में धूप सेंकने की बात तो समझ आती है लेकिन गर्मी में भी उनकी बाहर उपस्थिति कुछ और ही बया करती है।

भारतीय संस्कृति में बुजुर्ग अभिभावकों, गुरुजनों को आदर पर विशेष बल दिया गया है। मनुस्मृति के अनुसार, 'जो नित्य प्रति अपने वृद्धजनों का सम्मान एवं अभिवादन करते हैं, उनके यश, विद्या, आयु और बल-बुद्धि की अभिवृद्धि होती हैं।' चाणक्य 'वृद्ध सेवाय विज्ञानम्' की बात करते हैं।

यह शाश्वत सत्य है कि हर काल, हर परिस्थिति में प्रकृति का फूल, समय के साथ अपने यौवन की सुगंध पाता है तो संध्याकाल में मुरझाहट दिखाने लगता है। लेकिन उन्हें पैरों तले रौंदा नहीं जाता। एक समय था जब हमारी संस्कृति में बुजुर्गों का समाज में रुतबा था और उनकी बात मानी जाती थी। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव, विखण्डित होते संयुक्त परिवार, शहरीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से आत्मकेन्द्रित होते समाज में उनके अस्तित्व को नकारना शुरू कर दिया है। उनकी उपेक्षा होने लगी है। अनुपयोगिता का अहसास एक वृद्ध को जहाँ गतिशील सामाजिक जीवन से काट कर रख देता है वहीं उसके

सामने सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करने की समस्या भी आ खड़ी होती है। लगता है जैसे उनकी दशा उस कैलेण्डर जैसी हो गई है जिसे नये वर्ष आते ही रद्दी की टोकरी में फेंक दिया जाता है या फिर कापी किताबों पर जिल्द चढ़ाने के काम में लिया जाता है। शहर के हर पार्क में किसी तरह समय बिताने को अभिशप्त इन बूढ़ों की दशा को पीढ़ियों का अंतर कह कर टालना केवल कृतघ्नता है।

ऐसा भी नहीं है कि ऐसे परिवार बिल्कुल नहीं हैं जहाँ वृद्धों को पूरा सम्मान मिलता हो। लेकिन ऐसे परिवारों की संख्या धीरे-धीरे कम होती जा रही है। यह भी संभव है कि कुछ तथाकथित आधुनिक लोग जो एक ओर संयुक्त परिवार के लाभ तो लेना चाहते हैं लेकिन उसके विखंडन का दोष बुजुर्गों की रोक टोक पर डालकर अपना दामन बचाना चाहते हो। लेकिन वे अपने बचपन को याद नहीं करना चाहते जब वे हमारी हर जिद्द पूरा करने को तैयार रहते थे। हमारी हर मुस्कान पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अपनी हर थकान भूलकर हमारे पीछे भागते थे। हमें जरा सी खरोंच भी लग जाती थी तो उनकी नींद हराम हो जाती थी। ऐसे लोग क्यों नहीं समझना चाहते कि बुढ़ापा एक तरह से बचपन का पुनरागमन ही तो है। आज जब वे शरीर से अशक्त और मन से बेचैन है तो क्या हमें अपने अपना कर्तव्य भूला दे? क्या उन्हें सम्मान देने की रस्म अदायगी भर करते रहना चाहिए? क्या उन्हें उपेक्षित कर मृत्यु से पूर्व ही 'भूत' बनाना उचित है?

वृद्धावस्था जीवन का वह चरण है, जब उसे सम्मान और संरक्षण मिलना ही चाहिए। आखिर इस स्थिति में हम सभी को पहुँचना है, यह अहसास सभी को रहना चाहिए। वृद्धों के पास अनुभवों, संस्मरणों, स्मृतियों के विशाल भण्डार होते हैं। उनके अनुभव हमारे लिए अमूल्य धरोहर हैं जिन्हें संजोकर रखना हमारा कर्तव्य है। महानगरों में उन वृद्धों को एकाकी जीवन जीते देखा जाता था जिनके बच्चे विदेश में जा बसे हैं। परंतु अब यह अकेलापन बढ़ता जा रहा है। एक ही शहर में रहते हुए भी बच्चे वृद्धों से अलग हैं तो कुछ स्थानों पर घर के एक हिस्से में अपने बुजुर्गों को उनके हाल पर छोड़ बच्चे मस्त हैं। अनेक स्थानों पर वे असुरक्षित है। इधर इंटरनेट के दौर में तरह-तरह के जाल फैला लूटने, ठगने, ब्लैकमेल करने वाला माफिया सक्रिय हैं।

परिवारों के टूटने पर वृद्धों का बँटवारा होने लगा है। उनकी छोटी-छोटी जरूरतों को लेकर भी अक्सर कलह होने लगती है। हालांकि कानून में वृद्धों की सुरक्षा के लिए बनाये गये पैरंट्स और सीनियर सिटिजन कल्याण और देखभाल ऐक्ट 2007 के अनुसार 'बच्चों की यह कानूनी जिम्मेदारी है कि वह अपने बुजुर्ग मां-बाप की देखभाल करें। उनको अकेला छोड़ना या देखभाल न करना अपराध है। वृद्ध जैविक माता-पिता, दादा-दादी गुजारा राशि की मांग सकते हैं।' पर कितने वृद्धों इस कानून को जानते हैं। और जो जानते भी हैं, उनमें कितने अपनों के विरूद्ध न्यायालय की शरण में जाते हैं।

देश के कुछ स्थानों को छोड़ दे तो वृद्धों के लिए सुविधाएं न के समान है। देश की राजधानी में युवा कामकाजी महिलाओं के लिए बस यात्रा फ्री है परंतु बीमार, अशक्त वृद्ध से पूरा किराया वसूला जाता है। कुछ राज्यों में बसों में वरिष्ठ नागरिक के लिए सीटें भी आरक्षित नहीं है। रेलवे दशकों से जारी छूट छीन चुका है। जबकि लघु भारत कहे जाने वाले मोरिशस में हर वरिष्ठ नागरिक को चाहे उसकी आर्थिक दशा कुछ भी हो, उन्हें प्रति मास पांच हजार रुपये पेंशन के साथ-साथ, स्वास्थ्य और यातायात मुफ्त है। यहां भारत में प्रत्येक पात्र बुजुर्ग को वृद्धावस्था पेंशन क्यों नहीं मिलनी चाहिए। हम, हमारा समाज और हमारी सरकारें राष्ट्र की इस अमूल्य धरोहर के प्रति अनमने क्यों है? कब जागेगी और कौन जगायेगा?

ऋषि दयानन्द उवाच

➢ पड़ोसी के साथ बर्ताव करें कि जैसा अपने शरीर के लिए करते हैं।

➢ गो रक्षा सर्वोत्तम है और इसमें सबसे अधिक लाभ है। गोरक्षा करना सब मनुष्यों का कर्त्तव्य है।

परमात्मा की विद्यमानता

ईश्वर भक्ति और ब्रह्मचर्य से कमाल का शरीर बल

गतांक से आगे....

-बलवीर सिंह चौहान, घरौण्डा
मो.: 9354602556

शरीर बल भी ऋषिवर दयानन्द के अन्दर इतना जबरदस्त था कि कपूरथला के राजा रणधीर सिंह के सौतेले भाई विक्रम सिंह की दो घोड़ों की बघ्घी को पकड़ कर उन्होंने तनिक भी आगे सरकने नहीं दिया। घोड़े अपना पूरा बल लगाकर भी परास्त ही हुए। उस राजपुरूष द्वारा ब्रह्मचर्य बल पर तंज कसने के कारण ऋषि ने उनके साथ यह बल प्रदर्शन जालन्धर में किया था। एक अन्य घटना में उन्होंने दो लड़ते हुए साण्डों के सींग एक-एक हाथ से पकड़कर दोनों को इतनी जोर से धक्का दिया था कि साण्ड घबराकर दूर-दूर चले गये। उनके जीवन की एक और घटना यह है कि कीचड़ में धंसी एक किसान की बैलगाड़ी को मार खा-खा कर भी बैल बाहर नहीं निकाल पा रहे थे। दयालु दयानन्द से बैलों की पिटाई देखी नहीं गई। उन्होंने बैलों को गाड़ी से हटवाकर स्वयं अकेले ही भारी-भरकम गाड़ी को कीचड़ से बाहर खींच दिया। ऐसी एक चौथी घटना इस प्रकार है कि कर्णवास में उन्होंने वेद के उपदेश से उलट प्रचलित अवतारवाद और मूर्तिपूजा का खण्डन किया तो एक बड़े क्षत्रिय जमींदार कर्ण सिंह ने क्रोधित हो कर उन पर तलवार चला दी। वार से बचते हुए ऋषि ने कर्ण सिंह की कलाई पकड़कर इतनी जोर से भींच दी कि तलवार हाथ से गिर गई। ऋषि ने तलवार उठाकर उसके दो टुकड़े कर दिये। मनोबल और क्षमाभाव की शक्ति होने से जमींदार पर उलटकर वार न करके उसे क्षमा करते हुए कहा कि यदि तलवार से लड़ना है तो जोधपुर, जयपुर से जा भिड़ो।

एक और घटना यह है कि मूर्तिपूजक विरोधियों ने दो पहलवानों को दूध और जलेबियां खिलाने का लालच देकर, गंगा किनारे समाधि में बैठे ऋषि दयानन्द को गंगा में डुबाने के लिये भेजा। ज्योंहि उन दोनों ने गंगा में फैंकने के लिये ऋषि की बाहें पकड़ी त्योंहि ऋषि उनकी शरारत को समझ गये और दोनों के हाथ अपनी बाहों और शरीर के बीच में दबाकर गंगा में कूद गये। सांस रूकने पर जब वे दोनों पानी में छटपटाने लगे, तब ऋषि ने उन पर दया करके छोड़ दिया। इस प्रकार एक मनुष्य में एक साथ इतनी प्रतिभाओं का उत्पन्न हो जाना उस परमपिता परमात्मा की भक्ति का ही तो चमत्कार है। अतः जो भी नियमित नियमपूर्वक ध्यान-उपासना में लगेगा उसे उसकी श्रद्धा और लग्न अनुसार ईश्वर की ओर से कम या अधिक शक्तियां और दिव्य सिद्धियां तो अवश्य ही प्राप्त होंगी। पाठकजन यह मत सोचें कि दयानन्द तो महर्षि थे इसलिये बली थे। न न आपके शरीर की क्षमता से भी ज्यादा आपका भी बल अवश्य ही बढ़ेगा। उस बढ़े हुए बल का आपको स्पष्ट पता चलेगा। पूर्व पृष्ठों में आप पढ़कर आये हैं कि परमात्मा की उपासना से बुद्धि बढ़ना, बल मिलना और आनन्द मिलना ये तीन लाभ तो प्रत्येक उपासक को हर हालत में मिलने ही हैं। इनसे भी और अधिक लाभ लेना आपकी श्रद्धा, लग्न और कुशलता पर निर्भर है। परमात्मा साधक के परिश्रम के एक-एक कण का, उपासना में लगाये गये समय के एक-एक क्षण का शर्तिया लाभ देते हैं। क्योंकि सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी होने से वे सबकुछ देख और जान रहे होते हैं। अतः आप विश्वास पूर्वक निष्काम भाव से उपासना में जुटे रहें। फल की प्राप्ति अवश्य ही होगी। कर्म किये जा फल की चिन्ता मत कर रे इन्सान। ये है वेदों का ज्ञान, ये है गीता का ज्ञान।

ध्यान-उपासना के परिणाम

पूर्व में बताये अनुसार आपका ध्यान नाक की नोक पर प्रभु रूपी चमकते हुए श्वेत बिन्दु पर चल रहा है। आगे चलकर यह प्रकाश स्वयं ही बड़ा रूप धारण करके और भी सुहावने दिव्य रूप में भी दिखने लगेगा। यह आप पर प्रभु का आशीर्वाद बरसना शुरू हो गया है। आपकी नाक से बड़ी ही सुहावनी 'दिव्य गन्ध' फूट पड़ेगी। यह आपकी भक्ति की प्रथम पौड़ी है। चौबीसों घन्टे निरन्तर एक दिव्य खुशबु मिलने से जीवन अत्यन्त

सुहावना लगने लगेगा। आँखें इतनी तेजस्वी हो जायेंगी कि कठोर से कठोर व्यक्ति की भी आँखों में आँखें डालकर बात कर सकोगे। मनोबल योद्धाओं जैसा पाओगे। बुद्धि कहेगी कि मैं गुरूदत्त विद्यार्थी और हरदयाल एम0ए0 की पगडंडियों को छू लूँ। मन में प्रेम मीराबाई जैसा उमड़ पड़ेगा। दया और आनन्द से दयानन्द की तरह आत्म विभोर हो जाओगे। यह सारा जगत्, सब मनुष्य और सारे जीव-जन्तु प्यारे दिखाई देने लगेंगे। सब अपने से लगने लगेंगे। सारा विश्व एक परिवार है 'वसुधैव कुटुम्बकम' सत्य में ही लगने लगेगा। चित्त में असीम शान्ति छा जायेगी। वाणी में मिठास भरेगा। रूखे-सूखे भोजन में भी पकवानों से बढ़कर स्वाद आने लगेगा। खाने की चीजों का मूल स्वाद (ओरिजनल टेस्ट) ही अच्छा लगने लगेगा अर्थात् किसी भी खाने की वस्तु में मिर्च-मशाले आदि मिलाकर स्वादिष्ट बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। शरीर में एक आनन्द हर समय हिलोरे लेने लगेगा। मन स्वयं ओम् के जाप को चालु रखेगा, जिसे अजपा जाप कहते हैं और आश्चर्य की बात तो यह है कि इस आनन्द के अनुभव और स्वयं जप के चलते रहने के साथ-साथ साधक व्यक्ति अपने रोजगार के कार्यो, खेत के कार्यो, घरेलु कार्यो, पढ़ने-पढ़ाने के कार्यो, कार्यालय के लेखन, टाइपिंग, कम्प्यूटर आदि के कार्यो को और भी अधिक कुशलता से करने लगता है। साधक की टू एण्ड थ्री-इन-वन अर्थात् एक समय में दो-तीन काम करने की क्षमता हो जाती है। वह अपने रोजगार या अध्ययन के कार्य को भी कर रहा है और उसे प्रभु का स्मरण भी निरन्तर बना रहता है। तो है ना प्रभु मिलन में दुगुना-तिगुना लाभ। इसलिये प्रभु का ध्यान-उपासना दिल लगा कर करो, आदर और श्रद्धापूर्वक करो।

यह ऊपर जो विवरण दिया गया है सारा मेरे निजी अनुभव का वर्णन है। कई पाठकजन सोचते होंगे कि पहले के पृष्ठों में भक्ति को गुप्त रखने का जिक्र किया था यहाँ वह भेद खोल दिया है। मेरा निवेदन यह है कि यह तो साधना का ऊपरी रूप ही मैंने आपके समक्ष प्रकट किया है जो गुप्त रखे जाने वाले अन्य आन्तरिक लाभ हैं वे तो इनसे अलग ही हैं। उनका खुलासा नहीं किया जा सकता। उनके खोलने से अहंकार बढ़ने लगता है और अहंकार साधक और बिना साधक व्यक्ति को गिराकर ही दम लेता है।

साधना के आगे और निरन्तर चलने से क्षमतायें और भी अधिक बढ़ेंगी। तो इस प्रकार साधक कह उठेगा कि जीवन तो अब जीया है। ऐसी कृपायें बरसती हैं उस महान् प्रभु की, उस महान् देव की जिससे उपासक की लग्न प्रभु की ओर बढ़ती ही जाती है। ध्यान में देर तक बैठे रहने के बाद भी उठने को मन नहीं करता। प्रभु के साथ और अधिक बैठे रहने को ही मन चाहता रहता है। इस सम्बन्ध में किसी कवि ने बड़ा ही सुन्दर लिखा है :-

दीपक पर मंडराने का मजा, दीपक के परवाने से पूछ।
ईश्वर भक्ति का मजा, ईश्वर के दीवाने से पूछ ।।

मनुष्य जीवन के तीन तापों का शमन

वास्तव में मनुष्य तीन तापों अर्थात् तीन प्रकार के दु:खों द्वारा सताया जाता है, वे निम्नप्रकार हैं :-

1- आध्यात्मिक दु:ख : ये वे दु:ख होते हैं जो अपने शरीर से उपजते हैं। जैसे बुखार, टी0बी0, कैन्सर आदि बीमारियां।

2- आधिभौतिक दु:ख : जो दु:ख दूसरे मनुष्यों अथवा प्राणियों द्वारा पहुँचाये जाते हैं वे आधिभौतिक दु:ख हैं। मनुष्यों द्वारा लड़ाई-झगड़े में चोट से, वाहन आदि द्वारा कुचलने से। पशु, जानवर, जन्तु, कीट आदि द्वारा टक्कर या लात मार तथा काट-खा लेने से दु:ख पहुँचते हैं।

3- आधिदैविक दु:ख : ये दु:ख प्रकृति की ओर से मनुष्यों को मिलते हैं। जैसे भूकम्प, अतिवर्षा, बाढ़, चक्रवात, ओलावृष्टि, बादल फटना आदि-आदि। विभिन्न प्रकार से मनुष्य के मन में उपजे दु:ख भी आधिदैविक दु:ख कहे जाते हैं। जैसे मुकद्दमें बाजी से, चिढ़ाने से, किसी द्वारा निन्दा करने आदि-आदि से।

ईश्वर भक्ति से इन तीनों प्रकार के दु:खों से मनुष्य छूट जाता है। या तो ये दु:ख उपासक को घेरते ही नहीं हैं। यदि कारणवश घेर भी लें तो साधक को प्राप्त मनोबल, समत्वभाव, संयम आदि सिद्धियां इन दु:खों से पीड़ित नहीं होने देती, कष्ट की आहें उत्पन्न नहीं होने देती। इस प्रकार ईश भक्ति हर तरह से नर-नारियों के लिये अत्यन्त लाभकारी है।

स्वामी दयानन्द का विश्व को सन्देश वेदों में विज्ञान का उद्घोष

डॉ. महावीर मीमांसक

वेद का विषय बहुत लम्बे समय से विवादस्पद रहा है। वेद के प्राचीन प्रामाणिक विद्वान ऋषि आचार्य यास्क ने अपने वेदार्थ-पद्धति के पुरोधा ग्रन्थ निरुक्त के वेदार्थ के ज्ञाताओं की तीन पीढ़ियों का उल्लेख किया है। पहली पीढ़ी वेदार्थ ज्ञान की साक्षात् द्रष्टा थी जिसे वेदार्थ ज्ञान में किंचित् मात्र भी सन्देह नहीं था। **(साक्षात् कृत धर्माणः ऋषयो वभुवुः)** दूसरी पीढ़ी उन वैदिक विद्वानों की हुई जिन्हें वेदार्थ ज्ञान साक्षात् नहीं था, उन्होंने अपने से पुरानी ऋषियों की उस पीढ़ी से जो साक्षात्कृत धर्मार्थी, उपदेश के द्वारा वेदार्थ ज्ञान प्राप्त किया। इस दूसरी पीढ़ी को भी वेदार्थ ज्ञान सर्वथा शुद्ध और अपने वास्तविक रूप में ही मिला **(ते पुरवरेभ्योऽसाक्षात्कृत धर्मस्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः)** और तीसरी पीढ़ी उन लोगों की आयी जो उपदेश के द्वारा भी वेदार्थ ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ थी। उन्होंने वेद वेदांग आदि ग्रन्थों का समास्नान किया और उन ग्रन्थों की सहायता से वेदार्थ ज्ञान प्राप्त किया- **(उपदेशा-यग्लायन्त इमं ग्रन्थ समाम्नासिषुः। वेदं च वेदाङ्गानि च।)** इस तीसरी पीढ़ी के वेदार्थ ज्ञान साक्षात् रूप में नहीं हुआ अपितु परोक्ष रूप में प्राप्त हुआ। अतः इनका ज्ञान परतः प्रामाण्य ग्रन्थों पर आधारित था, वेद का स्वतः प्रामाण्य ज्ञान तो वेदार्थ को साक्षात् वेद की अन्तःसाक्षी के आधार पर समझने वाले लोगों को था। फिर इन तीनों पीढ़ियों में समय का परस्पर अन्तराल बहुत था। और इस तीसरी पीढ़ी के बाद तो उत्तरवर्ती लोगों के वेद-वेदांग आदि ग्रन्थ जो वेदार्थ के लिए परतः प्रामाण्य ग्रन्थ हैं और भी अधिक दुरूह और समझ से दूर हो गये। यास्क के समय तक आते-आते यह परिणाम हुआ कि वेदार्थ अधिकतर ओझल हो गया। विद्वान् वेद का मनमाना अर्थ करने लगे। एक-एक मन्त्र का अर्थ करने की परम्परा 10,11 प्रकार की चल पड़ी, यह स्वयं यास्क ने लिखा है, ''**इति याज्ञिकाः इति पौराणिक, इत्यैतिहासिकाः, इति वैयाकरणाः, इत्यन्ये, इत्यपरे, इत्येके**''। इन शब्दों में यास्क ने अपने ग्रन्थ निरुक्त में एक मन्त्र की व्याख्या अनेक प्रकार से करने का ब्यौरा दिया है। परिणामस्वरूप वेदार्थ इतना अनिश्चित, विवादास्पद और अज्ञात हैं तो वेद के मन्त्र अनर्थक हैं, उसका कोई अर्थ नहीं है **(''अनर्थकाः मन्त्रा इति कौत्सः)** यह वेदार्थ के अत्यन्त अन्धकार की स्थिति थी जो यास्क के समय तक थी।

यास्क सर्वप्रथम वैदिक विद्वान् थे जिनका लिखित ग्रन्थ न केवल यह कहता है कि वेद में भौतिक विज्ञान है, अपितु वेद की व्याख्या भी इस आधार पर करता है। यास्क ने अपने निरुक्त के प्रारम्भ में देवता शब्द की परिभाषा दी जो देवता वेद के प्रत्येक सूक्त या अध्याय के प्रारम्भ में दिये हुए होते हैं। ''**यत्काम ऋषिर्यास्यां देवतायामार्थ-पत्यमिच्छत् सतुतिं प्रयुङ्क्ते तद्दैवतः स मन्त्रो भवति**'' इस यास्कीय परिभाषा के अनुसार देवता उस सूक्त का वर्णनीय विषय होता है जो शीर्षक के रूप में प्रत्येक सूक्त या अध्याय के प्रारम्भ में वेद में दिया हुआ होता है ताकि पाठक को निश्चय रहे कि अमुक मन्त्रों का वर्णनीय विषय केवल तीन ही है, वे या तो पृथ्वी-स्थानीय भौतिक विज्ञान अग्नि है, या अन्तरिक्ष- स्थानीय भौतिक विज्ञान इन्द्र मेघ या विद्युत आदि है, या द्युस्थनीय भौतिक विज्ञान सूर्य है। **(र्द्रतिम्र एव देवताः इत्यादि) अग्निः पृथ्वीस्थानीय इन्द्रऽन्त-रिक्षस्थानीयः, सूर्यो द्युस्थानीयः।** समग्र विश्व-मण्डल की सृष्टि (समष्टि) इन्हीं तीन भौतिक भागों में विभक्त है, और वेद इसी समष्टि के विज्ञान की व्याख्या है जिनमें आत्मा और परमात्मा चेतन तत्व भी समाहित हैं, अतः वेद के मन्त्रों के ये तीन ही विषय या देवता हैं। निरुक्तकार यास्क ने इस स्थापना के बाद वेद के सभी देवताओं को इन्हीं तीन भागों में बांट कर इनकी भौतिक वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। यास्क के बाद मध्यवर्ती काल में यह वैदिक विज्ञान लुप्त हो गया।

आधुनिक काल में ऋषि दयानन्द ने इसे फिर से मूल रूप से खोजा और तात्विक दृष्टि से समझा। अतः उन्होंने घोषणा की कि ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'' और इसमें समूचा भौतिक विज्ञान मौजूद है। उन्होंने सभी वेदों का भाष्य करने का बीड़ा उठाया और भूमिका के रूप में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पुस्तक लिखी। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक विज्ञान प्रथम कोटि का विज्ञान है जो आत्मा और परमात्मा का विज्ञान है जो वेद में स्पष्ट है। भौतिक विज्ञान इस आध्यात्मिक विज्ञान के बिना अधूरा और पंगु

तथा अप्रासंगिक है जैसे शरीर चेतन तत्व या आत्मा के बिना बेकार और मुर्दा हैं आधुनिक भौतिक विज्ञानमें यह उन्होंने एक नया अध्याय जोड़ा जो कोरे और नंगे भौतिक विज्ञान की अनेक कमियों और समस्याओं का एकमात्र समाधान भी है। वेदान्त दर्शन में इसी आध्यात्मिक विद्या का विस्तार है जिसे आधुनिक भौतिक वैज्ञानिक समझने में संलग्न है। वायुयान विज्ञान, तार विज्ञान, विद्युत विज्ञान आदि अनेक भौतिक विज्ञानों के नमूने ऋषि दयानन्द वेद मन्त्रों की व्याख्या करके सर्वप्रथम प्रस्तुत किये। वेदों में भौतिक विज्ञान का उद्घोष ऋषि दयानन्द का आधुनिक युग का अद्वितीय क्रान्तिकारी नारा था।

ऋषि दयानन्द के बाद महा-महोपाध्याय श्री मधु सूदन ओझा हुए, जो महाराजा जयपुर के राजपण्डित थे। इनका जन्म सन् 1866 में हुआ और मृत्यु सन्1939 में। इन्होंने सन् 1884 में 18 वर्ष की आयु में (ऋषि दयानन्द के निर्वाण के बाद) वेदों पर लिखना प्रारम्भ किया। श्री मधुसूदन ओझा पौराणिक जगत् के परम प्रामाणिक वैदिक विद्वान् माने जाते हैं। महा- महोपाध्यायय श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी इन्हीं के प्रधान शिष्य माने जाते हैं जिनका नाम अभी भी पौराणिक जगत् में विख्यात है।

ऋषि दयानन्द के बाद श्री पं. मधुसूदन ओझा ने ''वैदिक विज्ञानम्'' पुस्तक लिखी जिसका सम्पादन श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ने किया। इस पुस्तक में श्री पं. मधुसूदन ओझा ने ऋषि दयानन्द की ही बात का समर्थन करते हुए वेदों में भौतिक विज्ञान स्वीकारा और वेदमन्त्रों की व्याख्या द्वारा वेदों में भौतिक विज्ञान प्रस्तुत किया। ऋषि दयानन्द के अनुकरण पर ही इन्होंने कहा ''**वेदः सत्यविद्यानां निधानमस्ति**'' (वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।) इन्होंने भारतीयों को अपनी सभी पुस्तकों में ऋषि दयानन्द के अनुकरण पर ही सर्वत्र आर्य कहा, कहीं भी हिन्दू नहीं कहा। ऋषि दयानन्द पौराणिक जगत् पर यह अद्भुत जादू जैसा प्रभाव था, जिसे बहुत कम विद्वान जानते हैं और अब तो सम्भवतः इस रहस्यमय तथ्य को भूल भी गये हैं। पं. मधुसूदन ओझा की यह ''वैदिक विज्ञानम्'' पुस्तक हमारे पास है जिसके विषय में विस्तार में हम फिर कभी लिखेंगे। वेदों में भौतिक विज्ञान के नमूने जानने के लिए हालैण्ड से प्रकाशित दूसरी पुस्तक Glorious Vision of the Vedas देखिये।

21वीं सदी पश्चिम के विज्ञान की आंधी और तूफान लेकर विश्व में आयेगी। वैज्ञानिक अविष्कार प्रकृति के रहस्यों को खोल कर रख देंगे। भौतिक विज्ञान की उपलब्धियां मानव को उतना साधन सम्पन्न बना देंगी कि जीवन के तौर-तरीके सर्वदा बदल जायेंगे। समाज और राष्ट्र का एक नया भौतिक रूप उभरकर सामने आयेगा।ऐसे समय में समूचे भारत राष्ट्र की परिचायक सत्ता का प्रश्न प्रबल रूप में खड़ा होगा। वेद और प्राचीन भारतीय शास्त्रों का ज्ञान विज्ञान पश्चिम की इस आंधी के साथ टक्कर लेने और अपना योगदान विश्व को देने की पूरी क्षमता रखते हैं। देश और मानव की गरिमा का वैदिक ज्ञान विज्ञान ही अक्षुण्ण बचा कर सर्वोपरि स्थान पर रख पायेगा। यही देश और समाज की सबसे अधिक मूल्यवान् और महत्वपूर्ण धरोहर होगी जिस पर भारतीय राष्ट्र गर्व करके पश्चिम के भौतिक अन्धकार में सूर्य के समान विश्व को प्रकाश दिखला सकता है। स्वामी दयानन्द जी महाराज का वेदों में विज्ञान दिखला सकता है। स्वामी दयानन्द जी महाराज का वेदों में विज्ञान का यह उद्घोष ऐसे समय में वैदिक ज्ञान विज्ञान की खोज करके मानवमात्र का प्रकाश स्तम्भ बन सकता है जिससे राष्ट्र पताका सर्वोपरि लहराती रहे और आधुनिक भौतिक विज्ञान अपने आपको भूलते हुए मानव को आध्यात्मिक चेतना थी। दिलाती रहे जो अखण्ड समष्टि के दर्शन की समूची वैज्ञानिक व्याख्या है। भौतिक विज्ञान के ऊपर चेतनतत्व (आत्मा-परमात्मा) का यह पराविज्ञान- ये दोनों मिलकर सर्वांगीण विज्ञान बनता जिसे वेद के माध्यम से स्वामी दयानन्द आधुनिक जगत् की चाहते है।

एक बात और महत्वपूर्ण है कि इस तर्कवाद और विज्ञानवाद के युग में विश्व के बड़े से बड़े सभी धर्म और सम्प्रदाय धराशायी होने का खतरा महसूस कर रहे हैं क्योंकि वे अन्धविश्वास के तर्कहीन तथा युक्तिहीन आस्था और श्रद्धा पर तथा मानवजाति में साम्प्रदायिक भेदभाव, घृणा, द्वेष तथा हिंसा की प्रबल दुर्भावना पर टिके हुए हैं। ऋषि दयानन्द का उद्घोषित वैदिक धर्म ही एक धर्म है जो छाती तान कर तर्क, युक्ति तथा विज्ञान का स्वागत करता और स्वयं विज्ञान की गुत्थियां सुलझाने का दावा पेश करते हैं तथा मानवमात्र को ''मनुर्भव'' कह कर एक इन्सान के यप में देखने''**मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे**'' कह कर मित्रता और प्रेम की दृष्टि को प्राणिमात्र के प्रति रखने तथा युक्ति और तर्क के आधार पर धर्म को परखने का पैमाना पेश करता है **(यस्तर्केण सन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः)**। तर्क, युक्ति और विज्ञानवाद पर आधारित ऐसे वेद को कभी कोई खतरा नहीं हो सकता, यही स्वामी दयानन्द का उद्घोष है।

पग-पग सजग बढ़ आगे, स्वागत को संसार खड़ा

-डॉ. विनोद बब्बर
-संपादक-राष्ट्र किंकर
मो. : 9868211911

पिछले दिनों देश उत्साह और गौरव से अपनी स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मनाया। सर्वत्र देश-प्रेम का भाव संचारित हुआ वहीं अपने गौरवशाली अतीत को श्रद्धा स्मरण किया गया। आज के भारत को युवा भारत कहा जाता है तो हर युवा के मन में अपने और अपने देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए कुछ सपने होना स्वाभाविक है। अपनी भावी पीढ़ी के सपनों को साकार करने लायक वातावरण बनाना वर्तमान पीढ़ी की भी जिम्मेवारी है इसलिए हर विवेकशील भारतीय को भारत के पुनर्निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित करने के लिए गंभीर चिंतन, मनन करना चाहिए।

भविष्य के भारत की संकल्पना मन में लिए जब मैं अपने कुछ अनुभवों की पोटली को टटोलता हूं तो मेरे स्मृति पटल पर 'भारत' नाम के प्रति वैश्विक श्रद्धा के चित्र पुनः-पुनः प्रकट होते हैं। परिस्थितियों ने विश्व के अनेक देशों की यात्रा का अवसर प्रदान किया। एक अवसर पर जब विदेश में अनुकूल भोजन की समस्या उत्पन्न हुई तो किसी ने कुछ कि.मी. दूर 'इण्डियन रेस्टोरेंट' की राह दिखाई। लगभग हर शाम हम वहां परम्परागत भारतीय भोजन प्राप्त करते। अपनी यात्रा के समाप्ति से एक दिन पूर्व उस रेस्टोरेंट के स्वामी से मिलने का अवसर मिला। बातचीत के क्रम में मैंने पूछा, 'आप भारत में मूलतः किस प्रांत से हैं?' तो उनका उत्तर था, 'भारत नहीं, पाकिस्तान से हूं।' तब मेरा प्रतिप्रश्न था, 'तब आपने अपने रेस्टोरेंट का नाम 'पाकिस्तानी रेस्टोरेंट' क्यों नहीं रखा?' मुस्कान बिखेरते हुए उसका उत्तर था, 'आज पूरे विश्व के लोग आते हैं। दिनभर भीड़ रहती है। तब कौन आता मेरे रेस्टोरेंट में!' यह सुनते ही मेरा मन अपने पूर्वजों के पुण्य प्रताप से सिंचित 'भारत' भूमि के प्रति अत्याधिक श्रद्धा से भर उठा जिसके नाम का ऐसा प्रताप कि उससे 'हजार साल तक जंग' करने का दम्भ भरने वाले भी उसके नाम से अपनी रोजी-रोटी चला रहे हैं। भविष्य के भारत का रोडमैप बनाते हुए भारत की इस वैश्विक स्वीकार्यता को सर्वोपरि रखना हमारा दायित्व हैं।

पूरे विश्व को एक परिवार (वसुधैव कुटम्बकम्) मानने वाली हमारी संस्कृति के प्रति सर्वत्र सम्मान रहा है। निसंदेह आज हमारी ज्ञान परम्परा (आयुर्वेद, योग, जीवनशैली आदि, आदि) और हमारी मेधा (विश्व के हर प्रमुख संस्थान में हमारे प्रतिभाशाली युवाओं की उपस्थिति) की वैश्विक स्वीकार्यता है। आज यदि कुछ देश अपना नेतृत्व भी सहर्ष भारतीय मूल को सौंप रहे हैं तो किम आश्चर्यम्? विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता के पद को हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री जी सुशोभित कर रहे हैं। यह भी संयोग नहीं, वास्तविकता को स्वीकार करने की विवशता है कि विश्व की महाशक्ति कहे जाने वाले प्रमुख राष्ट्र सर्वाधिक शक्तिशाली संगठन जी-20 का नेतृत्व भारत को सौंपते हुए गौरवांवित हैं। लेकिन फिर से विश्वगुरु होने की ओर अग्रसर भारत के पुत्र इतने भर से संतुष्ट नहीं हो सकते। वे इस अनुभूति को वास्तविकता में बदलने के लिए कोई कोर कसर बाकी नहीं रखेंगे।

आने वाले सुनहरे कल के लिए भारत को अपने श्रेष्ठ सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े रहते हुए वैज्ञानिक सोच के पथ पर बढ़ना है। हमारे लिए आधुनिकता और परम्परा में कोई परस्पर विरोध है ही कहां? गीता के 9वें अध्याय के 22 वें श्लोक में स्वयं भगवान श्री कृष्ण कहते हैं-

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

अर्थात् जो अनन्य भक्त मेरा चिन्तन करते हुए मेरी उपासना करते हैं, मेरे में निरन्तर लगे हुए भक्तों का योगक्षेम (अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा) मैं वहन करता हूँ।

यहां **योगक्षेमं वहाम्यहम्** का अर्थ है- जो वस्तु अपने पास नहीं है, उसे प्राप्त करना, और जो हैं, उसकी रक्षा करना। स्पष्ट है हमारी परम्परा, हमारे शास्त्र आधुनिकता को स्वीकार करने से रोकते नहीं अपितु प्रोत्साहित करते हैं। इसलिए आवश्यकता है शिक्षा, विशेष रूप से उच्च शिक्षा का प्रसार हो। विद्यालय स्तर पर किताबी शिक्षा के साथ-साथ व्यवहारिक तकनीकी ज्ञान भी अनिवार्य रूप से प्रदान किया जाये। वहीं मैकाले द्वारा दफ्तरी बाबू बनने की मानसिकता से मुक्ति के लिए आधुनिक जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप तकनीक स्नातक की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जाये। पर्यावरण संरक्षण, कूड़ा प्रबंधन, जल संरक्षण, वायरस उन्मूलन, अंतरिक्ष विज्ञान, हस्तशिल्प जैसे अनन्त क्षेत्रों में लगातार रिसर्च और उसके परिणामों को जन-जन तक पहुंचा गरीबी, बेकारी, बीमारी से मुक्त बेहतर जीवन के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। शिक्षा के साथ व्यायाम, सैन्य प्रशिक्षण, खेलकूद को अनिवार्य बनाकर ही कल के कर्णधारों को भविष्य की चुनौतियों के प्रति स्वस्थ, सक्षम और संवेदनशील बनाया सकता है। यहां यह विशेष उल्लेखनीय है कि यदि हम गुलामी भाषा से मुक्ति पाकर शिक्षा और ज्ञान का माध्यम अपनी भाषाओं, मातृ-भाषा, राष्ट्र-भाषा को बनाये तो अनुसंधान के क्षेत्र में अनेक नई प्रतिभाएं सामने आयेगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारा युवा अपनी प्रखर प्रतिभा से चमत्कार कर सकता है। पौराणिक इतिहास नहीं, कल ही की बात है जब हमें सुपर कम्प्यूटर देने से इंकार किया गया तो हमारे वैज्ञानिकों ने उससे भी बेहतर कम्प्यूटर बनाया। आज पूरा विश्व में हमारी विशिष्ट पहचान है। उससे पूर्व भी जब एक महाशक्ति ने हमें अनाज देने से इंकार किया गया तो हमारे षि वैज्ञानिकों ने हरित क्रांति का शंखनाद किया जिसका परिणाम है कि आज हम पूरे विश्व की जरूरतों को पूरा करने में भी सक्षम हैं।

आत्मानुशासन, मेहनत, लगन, सेवा, साधना हमारे गुणसूत्रों (डीएनए) में है। नित्य नया सीखने और संसार को कुछ नया देने की ललक हमारे युवाओं की पहचान बन चुकी है। हमारे प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों ने रक्षा, परिवहन, संचार, सोलर ऊर्जा के क्षेत्र में पूरे परिदृश्य को बदल कर रख दिया है। वह दूर नहीं जब हम पैट्रोलियम ईधन से मुक्त होंगे और सर्वत्र सौर ऊर्जा, ई-चांजिंग का साम्राज्य होगा। इससे जहां विदेशी मुद्रा की बचत होगी वहीं प्रदूषण से भी निजात मिलेगी।

विश्व में अपने लिए विशिष्ट स्थान तय करने के लिए हमें अगले कुछ वर्षो की कार्य योजना को केवल और केवल राष्ट्र समर्पित करना होगा। शिक्षा, मीडिया, कला-संस्कृति में घुसे राष्ट्र-संस्कृति विरोधी वायरस को नेस्तानाबूद किये बिना भारत को महान बनाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। यह कार्य सरकार अथवा किसी एक या कुछ संगठनों का नहीं अपितु पूरे समाज का है। हर नागरिक का है। पार्थ रूपी समाज को जागृत करने में साहित्य रूपी पार्थसारथी की महती भूमिका है। आज प्रौद्योगिकी ने परम्परागत पुस्तकों के साथ-साथ सोशल मीडिया जैसे अनेक मंच प्रदान किये है जिनसे लगभग प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में जुड़ा है। इसका सदुपयोग देश को बदनाम करने वालों को आईना दिखाने और अपनी संस्कृति के श्रेष्ठ सूत्रों को प्रचारित प्रसारित करने के लिए किया जाना चाहिए।

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र मेरा देश आज अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी के बाद विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। नये उत्साह से लबरेज आज का भारत सर्जिकल स्ट्राईक से डोकलाम और अब तवांग में हर कदम पर अपनी क्षमता का प्रमाण प्रस्तुत कर रहा है। इसलिए केवल आशा नहीं, विश्वास है कि आज का हर भारत पुत्र अनिश्चय छोड़, शिखर को स्पर्श करने, आगे और आगे बढ़ने की होड़ का अभ्यासी बनेगा -

दुनिया तेरी राह देखती, पार्थ क्यों निस्तेज खड़ा!
पग-पग सजग बढ़ आगे, स्वागत को संसार खड़ा!!

विक्रमी संवत 2080 की हार्दिक शुभकामनाएं!

शेखर वाणी :

तारे गिनो नहीं, स्वयं तारा बनो

मात्र अच्छा होना नहीं, अनिवार्य है समाज व राष्ट्र के लिए सदैव सक्रिय रहना भी

–सीताराम गुप्ता

कहा गया है कि केवल वही व्यक्ति आलसी या कामचोर नहीं है जो कार्य नहीं करता अपितु जो अच्छा और ज़्यादा कार्य कर सकता है लेकिन नहीं करता वह भी आलसी और कामचोर है। एक प्रश्न उठता है कि समाज अथवा राष्ट्र को कौन ख़राब करते हैं बुरे या अच्छे लोग? ऊपरी तौर पर तो यही लगता है कि बुरे लोग ही समाज को ख़राब करते हैं उसे कमज़ोर बनाते हैं लेकिन वास्तविकता कुछ अलग है, भिन्न है। वास्तव में अच्छे लोग ही समाज या राष्ट्र को ख़राब करते हैं, उसे कमज़ोर बनाते हैं। तो क्या फिर अच्छाई का दामन छोड़कर बुराई का दामन थाम लिया जाए जिससे समाज और राष्ट्र का भला हो सके? नहीं, ऐसी बात नहीं है। समाज के उत्थान और राष्ट्र के निर्माण में जो लोग कुछ नहीं कर सकते उनकी अपेक्षा जो लोग कुछ कर सकते हैं उनकी सक्रियता अनिवार्य है।

यदि कुछ करने में सक्षम लोग ही निश्क्रिय हो जाएँगे तो समाज कैसे उन्नति करेगा? इस प्रकार से अच्छे लोगों की निष्क्रियता ही समाज अथवा राष्ट्र को हानि पहुँचाती है। जो लोग कुछ कर सकते हैं वही अच्छे होते हैं और समाज के विकास के लिए उनके सक्रिय रहने की ज़रूरत होती है न कि निष्क्रिय बैठने की। मोलियर ने कहा है कि हम जो करते हैं उसके लिए ही नहीं अपितु हम जो नहीं करते उसके लिए भी जवाबदेह हैं। हमारी उदासीनता अथवा तटस्थता स्वस्थ समाज के विकास में बाधक बनती है। समाज में ग़लत चीज़ों का प्रचलन अच्छे लोगों की निष्क्रियता अथवा अच्छी पहल न करने के कारण ही होता है। कुछ अच्छे लोग इसलिए आगे नहीं आते क्योंकि वे अपनी अच्छी इमेज ख़राब होने से डरते हैं। समाज में कुछ लोग बहुत अच्छे माने जाते हैं। अनेक लोग बहुत अच्छे हैं लेकिन मात्र अच्छा होना ही तो पर्याप्त नहीं है अच्छा करना भी अनिवार्य है।

एक बार एक व्यक्ति गाय खरीदने के लिए एक मेले में गया। उसने गाय बेचने वाले एक व्यापारी से एक गाय की कीमत पूछी तो उसने बताया कि इस गाय की क़ीमत दस हज़ार रुपए है। उसने यह भी बताया कि यह दूध तो देती है लेकिन कभी–कभी सींग भी मारती है। व्यक्ति ने एक दूसरी गाय की क़ीमत पूछी तो व्यापारी ने बताया कि इस गाय की क़ीमत पन्द्रह हज़ार रुपए है क्योंकि यह कभी सींग नहीं मारती। यह दूध भी खूब देती है और हर साल अच्छे बच्चे भी। व्यक्ति ने जब तीसरी गाय की कीमत जाननी चाही तो व्यापारी ने कहा कि यह बहुत ही उम्दा नस्ल की गाय है। यह बहुत सीधी और सुंदर तथा आकर्षक गाय है। यह न तो कभी लात ही मारती है और न सींग ही लेकिन इसने न तो कभी बच्चा दिया और न दूध ही। इसे विशेष कार्यक्रमों और प्रदर्शनियों में ले जाया जाता है जहाँ इसको देखने के लिए बहुत सारे लोग आते है और इसकी ख़ूब प्रशंसा होती है इसलिए इसकी क़ीमत है बीस हज़ार रुपए।

प्राय: गाय बहुत सीधी होती है लेकिन जो गाय सीधी नहीं होती, मरखनी होती है उसे कोई नहीं खरीदना चाहता। कुछ गायें सीधी तो होती हैं लेकिन दूध नहीं देतीं अत: उनका सीधापन बेकार है। गाय का सीधापन तभी सार्थक और स्वीकार्य हो सकता है जब वो ख़ूब दूध दे। कहा गया है कि दूध देने वाले पशु की तो लात भी भली। बिना कुछ किए अच्छा होने की बजाय कुछ करके अच्छा न होना या अच्छा न कहलाना अधिक श्रेयस्कर है। यदि हम कुछ कर सकते हैं तो हमें अपनी इमेज की परवाह न करके समाज को आगे ले जाने के लिए अपनी क्षमता, योग्यता व कुशलता का पूर्ण उपयोग करना चाहिए। सम्पूर्ण राष्ट्र अथवा समाज के विकास में ही व्यक्ति का विकास निहित है और व्यक्ति के विकास के बिना समाज का विकास कैसे हो? समाज का पूर्ण विकास तभी संभव है जब हर व्यक्ति अपनी क्षमता और योग्यता का पूर्ण उपयोग समाज के हित में करे।

वैसे तो हर व्यक्ति अपरिमित क्षमता से युक्त होता है। ये बात अलग है कि कुछ व्यक्ति अपनी क्षमता को पहचान कर उसका विकास नहीं कर पाते लेकिन अनेक व्यक्ति अनेकानेक दुर्लभ गुणों और योग्यताओं से सम्पन्न होते हैं और यदि वे ही कामचोर और आलसी होंगे तो समाज का

पूर्ण विकास कैसे संभव होगा? समाज की उन्नति और समाज की उन्नति द्वारा स्वयं की उन्नति के लिए अच्छे लोगों को अपना पूर्ण योगदान देना ही होगा। यदि उनकी निष्क्रियता से समाज या राष्ट्र कमज़ोर होता है तो वे भी इससे अछूते नहीं रहते। ये उनके स्वयं के हित में भी है कि वे अपनी क्षमता और योग्यता का पूरा-पूरा उपयोग समाज के हित में करें। समाज का पूर्ण विकास होने पर कम योग्य अथवा आलसी और कामचोर लोग भी धीरे-धीरे इस प्रक्रिया में शामिल होने लगते हैं।

अच्छे लोगों के आगे आने से समाज का हर वर्ग प्रेरित होता है और विकास में सहयोग देता है। इससे विकास की प्रक्रिया तेज़ होती है और पूरा समाज लाभांवित होता है, समृद्ध होता है। समृद्ध समाज में योग्य और अच्छे व्यक्ति और अधिक समृद्ध होंगे इसमें भी संदेह नहीं। समृद्धि भी लोगों को अच्छा बनाने में सहायता करती है। अपेक्षा से अधिक समृद्ध समाज में अपराध भी कम होते हैं। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए अच्छे व्यक्तियों को आगे आना ही चाहिए और अपने कर्म से, अपने आचरण से नए मानदंड स्थापित कर समाज के लिए प्रेरणा और उत्प्रेरक तत्त्व का काम करना चाहिए। गीता में भी लिखा है:

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जो आचरण करता है सामान्य व्यक्ति उसी का अनुसरण करते हैं। वह अपने अनुसरणीय कार्यों से जो आदर्श प्रस्तुत करता है सम्पूर्ण विश्व उसका अनुसरण करता है अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत आदर्श विश्व के तमाम लोगों के आदर्श बन जाते हैं। समाज के उत्थान के लिए श्रेष्ठ व्यक्तियों को अपने कर्म द्वारा आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। उनकी कर्मशीलता और अध्यवसाय पूरे समाज को कर्मशील और अध्यवसायी बना देता है।

प्राय: यह देखा गया है कि अच्छे लोग जितना अधिक कार्य करते हैं उन्हें उतना ही इसके विपरीत सुनना भी पड़ता है। जो लोग अनुशासन का पालन करते हैं, हर जगह समय पर पहुँचते हैं उन्हें ही सुनाया जाता है कि लोग अनुशासन का पालन नहीं करते, समय का ध्यान नहीं रखते ये बुरी बात है जबकि वे तो समय से पहुँच चुके होते हैं और अनुशासन का पालन भी कर रहे होते हैं। वास्तव में अच्छे लोग ही अनुशासन का पालन करते हैं और उन्हें ही अनुशासनहीन लोगों के बदले ख़ुद सुनना पड़ता है क्योंकि अनुशासनहीन लोग तो सुनने के वक़्त पहुँचते ही नहीं। वैसे भी योग्य व्यक्तियों से ही समाज की अपेक्षाएँ होती हैं। उन्हें पता है कि ये ढीले पड़ गए तो ठीक नहीं होगा। अयोग्य, उदण्ड और अनुशासनहीन लोग कम काम करें अथवा काम न भी करें तो बहुत अधिक फ़र्क़ नहीं पड़ता।

अयोग्य, उदण्ड और अनुशासनहीन लोग समय पर न पहुँचे तो भी क्या फ़र्क़ पड़ता है बल्कि उनके न होने से माहौल अच्छा रहता है और कार्य अधिक सुचारु रूप से संपन्न होता है। यदि आप अच्छे व्यक्ति हो और अच्छे बने रहना चाहते हो या और अच्छा बनना चाहते हो तो धैर्यपूर्वक सुनने और आलोचना सहने का गुण भी विकसित करना अनिवार्य है। अच्छा व्यक्ति ही स्वयं कष्ट सहकर सबको खुशी देता है। इतिहास बतलाता है कि महापुरुषों ने भी समाज के उत्थान के लिए स्वयं कष्ट सहे और अच्छे लोगों को भी कष्ट सहने के लिए प्रेरित किया। गुरु नानकदेव जी के जीवन की एक घटना है। गुरु नानकदेव जी एक बार एक गाँव में रुके। वहाँ के लोगों ने उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया लेकिन नानकदेव जी ने जाते समय उनसे यही कहा कि तुम सब सुखपूर्वक यहीं बसे रहो।

अगले रोज़ नानकदेव जी एक दूसरे गाँव में पहुँचे। वहाँ के लोगों ने नानकदेव जी की खूब सेवा की लेकिन जाते समय नानकदेव जी ने उनसे कहा कि तुम सब उजड़ जाओ। गुरुजी के शिष्यों ने जब उनसे ये पूछा कि उन्होंने पिछले गाँव वालों को बसे रहने का आशीर्वाद क्यों दिया जबकि वे अच्छे लोग नहीं थे और इस गाँव वालों को उजड़ने का श्राप क्यों दिया जबकि ये तो बहुत अच्छे लोग हैं तो उन्होंने बतलाया, ''दुष्टों का एक जगह पड़े रहना ही ठीक है नहीं तो वे जहाँ जाएँगे वहीं बुराई फैलाएँगे और सज्जनों का उजड़ना ही अच्छा है क्योंकि वे जहाँ भी जाएँगे अच्छाई ही फैलाएँगे।'' अयोग्य लोग काम नहीं करते तो न सही लेकिन अच्छे लोगों को तो आगे आना ही चाहिए और समाज की अपेक्षाओं पर खरे उतरना चाहिए इसके लिए चाहे उन्हें कितने ही कष्ट भी क्यों न उठाने पड़ें। इसी में उनकी अच्छाई की चरितार्थता है।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली - 110034
मोबा0 नं0 9555562323
E-mail : srgupta54@yahoo.co.in

अनादि व अनन्त काल तक रहने वाला हमारा हितैषी सखा है ईश्वर

–मनमोहन कुमार आर्य

हमें मनुष्य का जन्म मिला है और हम जन्म से लेकर अब तक अपने पूर्वजन्मों सहित इस जन्म के क्रियमाण कर्मों का फल भोग रहे हैं। हम जीवात्मा हैं, जड़ शरीर नहीं हैं। जीवात्मा चेतन पदार्थ है। चेतन का अर्थ है कि यह जड़ न होकर संवेदनशील है और ज्ञान प्राप्ति एवं कर्म करने की सामर्थ्य से युक्त है। यह सुख व दुःख का अनुभव करता है। जीवात्मा अल्प परिमाण अर्थात् सूक्ष्म, एकदेशी व ससीम सत्ता है। यह अनादि व अमर है। जीवात्मा का कभी नाश अर्थात् अभाव नहीं होता, अतः इसे अविनाशी कहा जाता है। जीवात्मा अपने शरीर की इन्द्रियों यथा नेत्र तथा मन आदि की सहायता से स्थूल जड़ पदार्थों को देखता है परन्तु स्वयं अपने को अर्थात् अपनी आत्मा व सृष्टिकर्ता ईश्वर को नहीं देख पाता। कारण यही है कि जीवात्मा अत्यन्त सूक्ष्म है और परमात्मा आत्मा से भी सूक्ष्म अर्थात् सूक्ष्मतम है। हम वायु, जल की भाप, वायु में विद्यमान गैसों, धूल के सूक्ष्म कणों तथा दूर के बड़े आकार वाले पदार्थों को भी नहीं देख पाते। अतः यदि हम अपनी व दूसरों की आत्माओं तथा परमात्मा को नहीं देख पाते तो इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिये। **किसी भी पदार्थ व उसके अस्तित्व को उसके लक्षणों से जाना जाता है।** नदी में यदि जल का स्तर बढ़ जाता है तो अनुमान होता है कि नदी के ऊपरी भाग में कहीं भारी वर्षा हुई है। आकाश में धुआं देखते हैं तो हमें अग्नि का ज्ञान होता है। किसी मनुष्य व उसके बच्चे को देखते हैं तो ज्ञात होता है कि इसके माता–पिता अवश्य होंगे। यह हो सकता है कि पहले उसके जन्म, उससे पूर्व व पश्चात वह रहे हों परन्तु अब दिवंगत हो गये हों। अतः आत्मा व परमात्मा को भी इनकी क्रियाओं, रचनाओं व कार्यों के द्वारा जाना जाता है। आत्मा की उपस्थिति का अनुमान शरीर की जीवित अवस्था में इसमें होने वाली क्रियाओं से भी होता है। यदि शरीर में आत्मा न हो तो यह मृत कहलाता है और मृतक शरीर में किसी प्रकार की क्रियायें जो जीवित शरीर में होती हैं, नहीं होती। **ईश्वर को भी हम उसकी अपौरुषेय रचनाओं व कृतियों के द्वारा जानते हैं।**

संसार अर्थात् पंचभूतों पृथिवी, अग्नि, जल, वायु एवं आकाश से बने हुए जगत् का अस्तित्व है। वैज्ञानिक भी संसार के अस्तित्व को मानते हैं। **वैज्ञानिकों की विडम्बना यह है कि वह संसार को बनाने वाली सत्ता परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते।** इसका कारण यह है कि ईश्वर का अस्तित्व प्रयोगशाला में सिद्ध नहीं किया जा सकता जैसा कि भौतिक पदार्थों का होता है। इसी बात को दर्शनों में ईश्वर को अतीन्द्रिय अर्थात् ईश्वर इन्द्रियों से नहीं जाना जा सकता, कहकर बताया गया है। ईश्वर हमारी पांच ज्ञान इन्द्रियों से पकड़ में नहीं आता तथापि उसे वेद, दर्शन व उपनिषद पढ़कर तथा चिन्तन–मनन–ध्यान आदि के द्वारा जाना जा सकता है। हम योगियों, ईश्वर का ध्यान व चिन्तन करने वाले विद्वानों तथा स्वाध्यायशील लोगों की संगति से भी ईश्वर को जान सकते हैं। सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, आर्यसमाज के दूसरे नियम आदि के स्वाध्याय, अध्ययन व चिन्तन–मनन से भी ईश्वर का ज्ञान होता है। इस प्रकार से जीवात्मा एवं ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है। विज्ञान भौतिक पदार्थों का अध्ययन करता है। जीवात्मा और परमात्मा भौतिक पदार्थ वा सत्तायें नहीं हैं अपितु चेतन वा अभौतिक पदार्थ हैं, अतः इनका निर्भ्रान्त ज्ञान केवल वेद एवं वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय सहित योग, ध्यान, स्तुति, प्रार्थना, उपासना व समाधि आदि के द्वारा ही किया जा सकता है। बहुत से वैज्ञानिक ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते परन्तु ऐसे भी शीर्ष वैज्ञानिक हुए हैं जिन्होंने ब्रह्माण्ड में सृष्टिकर्ता एवं सृष्टि के पालक ईश्वर के होने की सम्भावना व्यक्त की है।

ईश्वर है और वह सच्चिदानन्दस्वरूप है। इसका सत्यस्वरूप ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास सहित आर्यसमाज के दूसरे नियम में प्रस्तुत किया है। आर्यसमाज के दूसरे नियम में वह बताते हैं कि **ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है। ऋषि दयानन्द ने इन शब्दों में ईश्वर के सम्बन्ध में जो कहा है वह यथार्थ सत्य है।** हमें इसके एक एक शब्द पर विचार करना चाहिये। आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व ईश्वर को जानने के लिये ईश्वर भक्तों को वर्षों तक स्वाध्याय, साधना एवं विद्वानों की संगति करनी पड़ती थी। तब जो ज्ञान प्राप्त होता था, हम समझते हैं कि ऋषि दयानन्द ने कृपा करके वही समस्त ज्ञान हमें एक दो वाक्यों में दे दिया है। यह नियम आध्यात्मिक जगत का अमृत है। ऋषि दयानन्द का मानवता पर यह बहुत बड़ा उपकार वा ऋण है। सभी मत–मतान्तरों के आचार्यों को इससे लाभान्वित होना चाहिये और अपने मतों में ईश्वर विषयक वैदिक मान्यता व दृष्टिकोण के आधार पर संशोधन एवं ईश्वर के सत्यस्वरूप अर्थात् गुण, कर्म व

स्वभाव का समावेश करना चाहिये।

ईश्वर अनादि सत्ता है। जीवात्मा भी अनादि सत्ता है। दोनों सत्तायें वा पदार्थ अजर, अमर सत्ता व अस्तित्व वाले हैं। आत्मा सूक्ष्म है तथा परमात्मा आत्मा से भी सूक्ष्म है। ईश्वर सर्वव्यापक तथा सर्वान्तर्यामी है। वह आत्मा के भीतर भी व्यापक है और हमारी आत्मा अर्थात् हमें हमसे भी अधिक जानता है। ईश्वर को हमारे अतीत का पूर्ण ज्ञान है। हमें अपने पूर्वजन्मों तथा इस जन्म की भी बहुत सी बातों का ज्ञान नहीं है। हमारी भूलने की प्रवृत्ति है। ईश्वर और जीवात्मा का व्याप्य–व्यापक, उपास्य–उपासक, सर्वज्ञ–अल्पज्ञ, पिता–पुत्र, स्वामी–सेवक आदि का सम्बन्ध है। यह सभी सम्बन्ध अनादि काल से हैं और अनन्त काल तक अबाध रूप से सदैव बने रहेंगे। कभी समाप्त नहीं होंगे। हमारा उपास्य ईश्वर है। हम उपासक है। हमारा यह सम्बन्ध भी नित्य सम्बन्ध है। **हम ईश्वर की उपासना करें या न करें परन्तु हमारा सम्बन्ध हर काल व क्षण उससे बना रहता है।** दोनों में देश व काल की दूरी नहीं है अपितु दोनों साथ–साथ रह रहे हैं। दोनों एक दूसरे के इतने निकट हैं कि हमारे इतना निकट अन्य कोई पदार्थ नहीं है। हमें जन्म–मरण तथा सुखों को देने वाला भी ईश्वर ही है। हमारे कर्मानुसार हमें मनुष्य सहित अनेकानेक योनियों में जन्म–मृत्यु देकर व सृष्टि की उत्पत्ति–स्थिति व प्रलय का चक्र चलाकर वह हमें घुमाता रहता है। **वह हमारे किसी दुःख व सुख में हमारा साथ कभी नहीं छोड़ता।** ईश्वर के हमारे ऊपर अनन्त उपकार हैं। हम कितना भी कर लें, उसके उपकारों रूपी ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकते। हम केवल उसके उपकारों के लिये मनुष्य जीवन में उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना ही कर सकते हैं। उसकी आज्ञा का पालन कर हम अपने कर्तव्य का पालन कर सकते हैं और उससे सुख व सुख के साधन प्राप्त कर सकते हैं। ईश्वर ने वेदों में मनुष्यों के कर्तव्य व अकर्तव्यों का ज्ञान कराया है। हमें अपने जीवन में प्रतिदिन वा सब दिनों में वेदों का स्वाध्याय वा अध्ययन करना चाहिये। ऋषि दयानन्द एवं आर्य विद्वानों का वेदों का भाष्य पढ़कर हम वेदों का स्वाध्याय कर सकते हैं और ईश्वर की वेदों के माध्यम से सभी मनुष्यों को की गई प्रेरणाओं को जानकर व उसका आचरण कर हम अपना कल्याण कर सकते हैं। यही हमारा कर्तव्य व धर्म है। वेदों का स्वाध्याय एवं उसके अनुसार आचरण ही संसार में एकमात्र धर्म है। हम जिन्हें धर्म कहते हैं उनमें से कोई भी धर्म न होकर सभी मत–मतान्तर, सम्प्रदाय, रिलीजन, मजहब आदि हैं। धर्म तो केवल वेदनिहित व वेदविहित ईश्वर की सत्य आज्ञाओं का पालन करना ही है। ऐसा करके ईश्वर हमारा मित्र व सखा बन जाता है। उपासना करके हम ईश्वर के जितना निकट जायेंगे उतने हमारी आत्मा के मल दूर होते जायेंगे। हम ज्ञान प्राप्त करेंगे और ईश्वर की इस सृष्टि में सब प्राणियों को अपने एक परिवार के रूप में जानेंगे और व्यवहार करेंगे। इसी कारण हमारी संस्कृति में **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** का विचार आया है जो कि सत्य व यथार्थ है।

हम कुछ वर्ष पूर्व इस संसार में जन्में हैं। कुछ वर्ष बाद हमारी मृत्यु निश्चित है। जन्म से पूर्व भी हमारी आत्मा का अस्तित्व था और मृत्यु के बाद भी हमारी आत्मा का अस्तित्व रहेगा। अनादि काल से हमारे अगण्य जन्म हो चुके हैं। अगण्य बार हम मृत्यु को प्राप्त हुए हैं। प्रायः सभी अगण्य योनियों में कर्मानुसार हमारा जन्म हुआ है और आगे भी होगा। अनेक बार हम मोक्ष में गये हैं और मोक्ष से लौटे भी हैं। **इन सब अवस्थाओं में ईश्वर ही एकमात्र हमारा साथी, मित्र व सखा रहा है और आगे भी रहेगा।** यह ध्रुव सत्य है। इसे हमें अनुभव करना है और इसके आधार पर हमें अपने भावी जीवन के निर्वाह की योजना बनानी है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने सभी मनुष्यों के लिये पंचमहायज्ञों का विधान किया है। इन यज्ञों को करके हम अपनी आत्मा की उन्नति करते हैं और मोक्ष के निकट पहुंचते हैं। मोक्ष में भी हम ईश्वर के साथ रहते हैं और उससे शक्तियों को प्राप्त करके आनन्द से युक्त रहते हैं। जन्म व मरण तथा इन दोनों के बीच जितने व जिस प्रकार के अनेकानेक क्लेश होते हैं, मोक्ष प्राप्त होने पर हम उनसे बचे रहते हैं। सभी मनुष्यों का एकमात्र परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति के लिये पुरुषार्थरत, तपस्यारत, उपासनारत, सन्ध्या–यज्ञ एवं परोपकार के कार्यों में संलग्न रहना है। वैदिक पथ पर चलकर ही हमारी उन्नति हो सकती है। अन्य मार्ग मनुष्य को गुमराह करते हैं व बन्धन में डालकर उसे दुःखों से युक्त बनाते हैं। वेदेतर मत मनुष्य को न तो उसकी आत्मा का यथार्थ स्वरूप बतातें हैं और न ईश्वर के सच्चे स्वरूप से ही परिचित कराते हैं। संसार में वेदों व ऋषियों के वेदानुकूल ग्रन्थों का ज्ञान मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। जो मनुष्य इससे वंचित हैं वह वस्तुतः ज्ञान व कर्मों की पूंजी की दृष्टि से दरिद्र हैं। **वेद–ज्ञान एवं उसके अनुसार आचरण किए बिना मनुष्य दुःखो व दरिद्रताओं से नहीं छूट सकता। ज्ञान वह है जो सभी विषयों से सम्बन्धित सत्य व असत्य का यथार्थ ज्ञान कराये। ईश्वर व आत्मा विषयक सत्य ज्ञान प्राप्त करना ही मनुष्य का प्रथम, मुख्य एवं अनिवार्य कर्तव्य है।** इससे हम ईश्वर व आत्मा को जानकर अपना व अन्यों का कल्याण कर सकते हैं जैसा कि अतीत में ऋषि दयानन्द सहित अन्य ऋषियों व आर्य महापुरुषों ने किया है। निष्कर्ष यह है कि हम ईश्वर व उसके गुणों को जानकर उसके शाश्वत सखा बने और अपने इस जन्म एवं भावी जन्मों के दुःखों को दूर करें। उन्नति का अन्य कोई मार्ग नहीं है। हमें यह निश्चय होना चाहिये कि ईश्वर ही हमारा **अनादि व अनन्त काल तक रहने वाला सच्चा हितैषी सखा व मित्र है।**

पताः 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
मो. : 09412985121

कोरोना वायरस से लड़ेगा:- आयुर्वेदिक काढ़ा
गिलोय, पिप्पली, अश्वगंधा, मुलहटी

डॉ. श्वेत केतु शर्मा, बरेली
मो.: 7906178915

गतांक से आगे....

(3) अश्वगंधा :-

आयुर्वेदिक औषधियों में अश्वगंधा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कई रोगों में अश्वगंधा का प्रयोग किया जाता है।

भारतीय पारंपरिक औषधि प्रणाली में अश्वगंधा को तनाव- रोधी जड़ी बूटी के रूप में जाना जाता है। इस वजह से तनाव से संबंधित लक्षणों और चिंता विकारों में होने वाली जड़ी बूटियों में अश्वगंधा लाभकारक है।

असगंध का नाम अश्व और गंध से लिया गया है। अश्वगंधा की जड़ और पत्तों से घोड़े के मूत्र एवं पसीने जैसी दुर्गंध आने के कारण ही इसका नाम अश्वगंधा रखा गया है। अश्वगंधा के सेवन से अश्व (घोड़े) जैसी ताकत और यौन शक्ति बढ़ती है।

अश्वगंधा एक द्विबीज पत्रीय पौधा है। जो कि सोलेनेसी कुल का पौधा है। सोलेनेसी परिवार की पूरे विश्व में लगभग 3000 जातियाँ पाई जाती हैं। और 90 वंश पाये जाते हैं। इसमें से केवल 2 जातियाँ ही भारत में पाई जाती है।

इस जाति के पौधे सीधे, अत्यन्त शाखित, सदाबहार तथा झाड़ीनुमा 1.25 मीटर लम्बे पौधे होते हैं। पत्तियाँ रोमयुक्त, अण्डाकार होती हैं। फूल हरे, पीले तथा छोटे एंव पाँच के समूह में लगे हुये होते हैं। इसका फल बेरी जो कि मटर के समान दूध युक्त होता है। जो कि पकने पर लाल रंग का होता है। जड़े 30-45 सेमी लम्बी 2.5-3.5 सेमी मोटी मूली की तरह होती हैं। इनकी जड़ों का बाह्य रंग भूरा तथा यह अन्दर से सफेद होती हैं।अश्वगंधा से लाभ:-

(1) सफेद बाल को रोकने में करें अश्वगंधा का प्रयोग :-

2-4 ग्राम अश्वगंधादि चूर्ण का सेवन करें। इससे समय से पहले बालों के सफेद होने की समस्या ठीक होती है।

(2) आंखों की ज्योति मे अश्वगंधा से लाभ:-

2 ग्राम अश्वगंधा, 2 ग्राम आंवला (धात्री फल) और 1 ग्राम मुलेठी को आपस में मिलाकर, पीसकर चूर्ण को एक चम्मच चूर्ण को सुबह और शाम पानी के साथ सेवन करने से आंखों की रौशनी बढ़ती है।

(3) गले के रोग (गलगंड) में अश्वगंधा से लाभ:-

अश्वगंधा के पत्ते का चूर्ण तथा पुराने गुड़ को बराबर मात्रा में मिलाकर 1.2-1 ग्राम की वटी बना लें। इसे सुबह-सुबह बासी जल के साथ सेवन करें। अश्वगंधा के पत्ते का पेस्ट तैयार करें। इसका गण्डमाला पर लेप करें। इससे गलगंड में लाभ होता है।

(4)टीबी रोग में अश्वगंधा का उपयोग:-अश्वगंधा चूर्ण की 2 ग्राम मात्रा को असगंधा के ही 20 मिलीग्राम काढ़े के साथ सेवन करें। इससे टीबी में लाभ होता है। अश्वगंधा की जड़ से चूर्ण बना लें। इस चूर्ण की 2 ग्राम लें और इसमें 1 ग्राम बड़ी पीपल का चूर्ण, 5 ग्राम घी और 5 ग्राम शहद मिला लें। इसका सेवन करने से टीबी (क्षय रोग) में लाभ होता है।

(5) अश्वगंधा से खांसी का लाभ:-

असगंधा की 10 ग्राम जड़ों को कूट लें। इसमें 10 ग्राम मिश्री मिलाकर 400 मिलीग्राम पानी में पकाएं। जब इसका आठवां हिस्सा रह जाए तो इसे थोड़ा-थोड़ा पिलाने से कुकुर खांसी या वात से होने वाले कफ की समस्या में विशेष लाभ होता है।

(6) सीने के दर्द में अश्वगंधा से लाभ :-

अश्वगंधा की जड़ का चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा का जल के लेने पर सीने के दर्द मे लाभ होता है।

(7) पेट के रोगों में अश्वगंधा से लाभ:-

अश्वगंधा चूर्ण को पेट के रोग में लिया जा सकता हैं। पेट की बीमारी में अश्वगंधा चूर्ण का प्रयोग कर सकते हैं। अश्वगंधा चूर्ण में बराबर मात्रा में, बहेड़ा चूर्ण मिला लें। इसे 2-4 ग्राम की मात्रा में गुड़ के साथ सेवन करने से पेट के कीड़े खत्म होते हैं।

निरोगी काया में ही सुख

सुरिन्द्र चौधरी

आज लगभग प्रत्येक प्राणी चाहे अमीर है या गरीब है, राजा हो या रंक हो, सुख को पाने के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार अनेक यत्न कर रहा है। परन्तु अनेक यत्नों के पश्चात भी प्राणी सुख को प्राप्त करने में अपने आप को असफल महसूस करता है। क्या वास्तव में सुख को प्राप्त करना एक कठिन कार्य है? या प्राणी सुख को प्राप्त तो करना चाहता है और पा भी लेता है पर वह नही जानता कि उस ने सुख को पा लिया है। शायद वह सुख को परिभाषित करना नही जानता है। उदाहरण के लिए अगर आप बाजार में गन्ना खरीदने जाते है परन्तु आप को गन्ने का ज्ञान नही है तो कोई आप को गन्ने के स्थान पर बांस को बेचने में सफल हो सकता है। इसलिए सुख प्राप्ति की लालसा से पूर्व सुख की परिभाषा जानना प्राणी के लिए अति आवश्यक बन जाता है।

यास्क ने सुख को इस प्रकार परिभाषित किया है। सुख :– सु (सुहितम्) + खम् (खे ु इन्द्रिये ु), इन्द्रियों में जो अनुभव निहित है या जो इन्द्रियगत अनुभव है। अन्य विद्वानों के अनुसार सुख :– सु (सुहावनी स्थिति) + ख (इन्द्रियॉ), इन्द्रियों की सुहावनी स्थिति। जो हमारी इन्द्रियों के अनुकूल है, अर्थात जो हमारी इन्द्रियों को अच्छा लगता है, वह सुख कहलाता है। सुख का सम्बंध आत्मा से नही है, सुख तो केवल और केवल इन्द्रियों से सम्बंधित है। सुख एक अनुभूति है। वास्तव में सुख दुख मन की परिभाषा है। सुख और दुख केवल मानसिक स्थिति है। सुख दुख का प्रभाव प्राणी के जीवन पर पड़ता है। दुखी होने पर प्राणी अप्रसन्न, बाधित दिखाई देता है और इस अवस्था से बाहर निकलने को प्रयासरत रहता है, जबकि सुखी होने पर प्राणी प्रसन्न, बाधारहित दिखाई देता है और इस अवस्था को छोड़ना नही चाहता।

सुख की परिभाषा प्रत्येक प्राणी के लिए अलग अलग हो सकती है। जैसे किसी प्राणी को नरम मुलायम बिस्तर पर सोने से सुख मिलता है और वह उठते ही कहता है कि मैने सुख की नींद ली है। परन्तु सख्त बिस्तर पर सोने वाले को मखमली नरम मुलायम बिस्तर पर सुलाया जाये तो वह उठते ही कहेगा कि आज मै सुख से सो नही सका। कहने का तात्पर्य यह है कि प्राणी जब ऐसे वातावरण में निद्रा को प्राप्त करता है जहां उसके अनुकुल संसाधन (बिस्तर, शान्त वातावरण और अनुकुलित तापमान आदि) उपलब्ध होते है तभी उसे सुख की अनुभूति होती है।

सुख की परिभाषा न केवल प्राणी से प्राणी बदलती है, अपितु स्थिति अनुसार भी बदलती है। जैसे किसी प्राणी को खीर खाना सुखदायी लगता है, परन्तु अस्वस्थ होने पर या पेट भरा होने पर उस प्राणी के लिए खीर खाना सुखदायी नही हो सकता। आज के समय में प्राणी समझता है कि धनवान बनकर ही वह सुखी हो सकता है, उसकी यहीं गलत सोच ही उसके सुख प्राप्ति में बाधक बन रही है। वह सुखी होने के लिए नैतिक एवं अनैतिक सभी साधनों के द्वारा केवल और केवल अधिक से अधिक धन कमाना चाहता है। सुख की प्राप्ति के लिए धन एक अहम एवं आवश्यक साधन है, इसलिए धन को अर्जित करना गलत नहीं है। परन्तु केवल और केवल मेहनत की कमाई से अर्जित धन ही सुख में सहायक सिद्ध होता है। अनैतिक व्यवहार द्वारा या बिना मेहनत किए प्राप्त धन से सुख कदापि भी प्राप्त नही हो सकता है। इसी आशय को निम्नलिखित दृष्टान्त में सुन्दर ढ़ंग से स्पष्ट किया गया है।

काशी में एक कर्मकांडी पंडित का आश्रम था, उसके घर के सामने एक मोची बैठता था। मोची उठते बैठते हर समय भजन गाता रहता था, यहां तक कि वह जूते की मरम्मत करते समय भी कोई न कोई भजन गाता रहता था। पंडितजी का ध्यान कभी भी उसके भजन की ओर नहीं जाता था। एक बार पंडितजी बीमार पड़ गये, तब लेटे लेटे उनका ध्यान मोची के भजनों की तरफ गया। पंडितजी का मन रोग

की तरफ से हटकर मोची के भजनों की तरफ चला गया। धीरे–2 उन्हें महसूस हुआ कि मोची के भजन सुनते–2 उनका दर्द कम हो रहा है। एक दिन एक शिष्य को भेजकर उन्होंने मोची को बुलवाया और कहा 'भाई तुम तो बहुत अच्छा गाते हो। मेरा रोग बड़े–2 वैद्यों के इलाज से भी ठीक नहीं हो रहा था, परन्तु तुम्हारे भजन सुनकर मै ठीक होने लगा हूँ। पंडितजी ने मोची को सौ रुपये देते हुए कहा 'तुम इसी तरह गाते रहना।' मोची रुपये पाकर बहुत खुश हुआ, परन्तु रुपये पाने के बाद उसका मन कामकाज से हटने लगा, वह भजन गाना भूल गया। वह दिन–रात यही सोचने लगा कि रुपये को संभालकर कहां रखे। काम में लापरवाही के कारण उसके ग्राहक भी उससे नाराज रहने लगे। धीरे–2 उनकी दुकानदारी चौपट होने लगी। भजन बंद होने के कारण पंडितजी का ध्यान फिर से रोग की तरफ जाने लगा और उनकी हालात फिर से बिगड़ने लगी। एक दिन अचानक मोची पंडित जी के पास पहुंचकर बोला 'आप अपने पैसे वापिस रख लीजिए।' पंडितजी ने पूछा 'क्यों, क्या किसी ने तुमसे कुछ कहा?' मोची बोला 'कहा तो नहीं, लेकिन इन पैसों को अपने पास रखूंगा तो आप की तरह मै भी बिस्तर पकड़ लूगां। इन पैसों ने मेरा जीना हराम कर दिया है, मेरा भजन गाना भी छूट गया है। काम में मन नहीं लगता है, इसलिए कामकाज ठप होता जा रहा है। मुझे समझ आ गया है कि अपनी मेहनत की कमाई में जो सुख है, वह पराये पैसे में नहीं है। आप के पैसों ने तो ईश्वर से भी नाता तुड़वा दिया है। मोची पंडित जी को पैसे वापिस करके खुशी का अनुभव करने लगा, वह फिर से काम करते–2 ईश्वर के भजन गुनगुनाने लगा।

क्रमशः

समाचार दर्पण

अंकिता चौधरी को सम्मानित किया गया

22 मार्च 2023 को श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के 54वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर महाविद्यालय की प्रतिभावान छात्राओं को महाविद्यालय के सभागार में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सुश्री अंकिता चौधरी को बी कॉम (आनर्स) प्रथम वर्ष की परीक्षाओं में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर छात्राओं एवं उनके अभिभावकों की उपस्थिति में प्रशस्ति पत्र एवं उपहार स्वरूप प्रेरणादायक पुस्तक देकर सम्मानित किया गया। सुश्री अंकिता चौधरी को कॉर्पोरेट कानून विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए नकद पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा अनेक सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। परमपिता ईश्वर से प्रार्थना है कि अंकिता चौधरी को जीवन के प्रत्येक मोड़ पर इसी प्रकार सफलता प्राप्त करने का विशेष आशीर्वाद प्रदान करें। सुश्री अंकिता चौधरी की विशेष उपलब्धि से चौधरी परिवार, अध्यात्म पथ परिवार गौरवान्वित अनुभव कर रहा है। कार्यक्रम के अंत में छात्राओं एवं अभिभावकों के लिए जलपान का प्रबन्ध किया गया।

बाएं से दाएं खड़े हुए (श्रीमती निशा अरोड़ा, श्रीमती साधना शर्मा, सुश्री अंकिता चौधरी, श्रीमती नीलम गोयल) संवाददाता–अध्यात्म पथ।

आधुनिकता का दुष्प्रभावः यूरिक एसिड

-डा. अम्बरीश कुमार

हमारे शरीर में यूरिक एसिड बढ़ने के मामले बढ़ रहे हैं। यूरिक एसिड एक कार्बनिक यौगिक है जो हाईड्रोजन, ऑक्सीजन और नाईट्रोजन जैसे तत्वों से मिलकर बनता है। शरीर में यूरिक एसिड प्यूरीन नामक यौगिकों से बनता है। शरीर में प्यूरीन के दो मुख्य स्रोत हैं: भोजन और मृत कोशिकाएँ। यह रक्त के माध्यम से किडनियों तक पहुँचता है, किडनी इसका शरीर की जरूरत के हिसाब से संतुलन करने के बाद जरूरत से अधिक एसिड को पेशाब के माध्यम से बाहर निकाल देती हैं। लेकिन यदा कदा इसकी मात्रा बढ़ जाती है। इससे शरीर में कई समस्याएँ हो सकती हैं यथा, क्रिस्टल बन जाते हैं और वे शरीर के जोड़ जैसे हाथ-पैरों की उँगलियों के जोड़ों को प्रभावित कर गाउट (गठिया) जैसी बीमारी का रूप ले लेते है। यूरिक एसिड के बड़े हुए स्तर से गुर्दे की पथरी आदि हो सकती है।

अत्याधिक प्यूरीन वाले खाद्य पदार्थो के सेवन से यूरिक एसिड का बढ़ना सामान्य हो सकता है। यह महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक बढ़ता है। शाकाहारियों की तुलना में मांसाहारी को इसके बढ़ने का खतरा अधिक होता है। इसके बढ़ने के अन्य कारणों में वजन अधिक होना या मोटापा, मूत्रवर्धक दवाएँ लेना, अधिक प्यूरीन वाले खाद्य पदार्थों का सेवन करना और शराब का सेवन करना, अनुवांशिक समस्याएँ, किडनी की कार्यक्षमता कम होना, कीमो थैरिपि जैसे इलाज जिनसे शरीर में मृत कोशिकाओं की बढ़ोत्तरी होती है अथवा कैंसर सें शरीर में कोशिकाओं के बढ़ना भी शामिल है।

परम्परागत भारतीय रसोई में दाल उबलने से जो झाग बनती थी तो उसे कडछी से निकाल दिया जाता था। परंतु अब कूकर में ऐसा नहीं हो पाता। इसे भी यूरिक एसिड़ बढ़ने का एक कारण माना जाता है। रक्त जांच से यूरिक एसिड बढ़ने की पुष्टि होती है। इसके लक्षण है-

यूरिक एसिड के बढ़ने से गठिया हो जाती है। हड्डियों के जोड़ो में तेज दर्द, जोड़ों को हिलाने में असमर्थता, जोड़ो पर सूजन आ जाती है।

रक्त में यूरिक एसिड बढ़ जाने से शरीर में क्रिस्टल बन जाते हैं जिनसे किडनी में पथरी हो जाती है। ये पथरी छोटी हो तो पेशाब के जरिए शरीर से बाहर निकल जाती हैं लेकिन जब यह बड़ी हो जाती तो मूत्र-प्रणाली के किसी भी अंग में रुकावट का कारण बन सकती हैं।

यूरिक एसिड का बढ़ना शरीर के बाकी अंगों को भी प्रभावित करता है। जैसे इसके बढ़ने से मरीज उच्च रक्तचाप और मधुमेह जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तो हृदय पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सावधानियां : इन चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए- लाल मांस, समुद्री खाद्य पदार्थ, मछली, कोल्ड ड्रिंक्स, बीयर और मादक पेय, खमीर से बने खाद्य पदार्थ जैसे- ब्रेड आदि बेकरी उत्पाद, डिब्बाबंद फल, आइसक्रीम जैसे उच्च फ्रुक्टोज कॉर्न सिरप युक्त खाद्य पदार्थ, दाले, अरबी, पालक, मटर, बीन्स और मशरूम, सेम जैसी फलियाँ।

क्या खाना चाहिए - घरेलू नुस्खों में अजवायन अथवा अलसी का सेवन करने से यूरिक एसिड का स्तर धीरे-धीरे कम होने लगता है। इसका प्रयोग खाना पकाते वक्त भी किया जा सकता है। गिलोय के पत्ते/तने को रातभर भिगाये, सुबह आधा होने तक उबालें और छानकर ग्रहण करें।

बथुआ के पत्तों का जूस निकालकर सुबह खाली पेट इसका सेवन करें। इस जूस को पीने के बाद दो घण्टे तक कुछ भी न खाने से शीघ्र लाभ मिलता है। हरे नारियल के पानी से भी यूरिक एसिड घटाने में मदद मिलती है। पानी खूब पिएं, कम वसा वाले डेयरी उत्पाद दूध, दही और पनीर, अनाज और मांड (स्टार्च), रक्त में यूरिक एसिड के बढ़े स्तर को कम करने के लिए सेब का सिरका काफी फायदेमंद है।, नींबू, चेरी, संतरा, अनानास, स्ट्रॉबेरी, आंवला आदि फल और उनके जूस, विटामिन-सी के अन्य स्रोत, टमाटर और एवोकैडो तथा चिकित्सक के परामर्श के अनुसार।

प्रसिद्ध योगगुरु रामदेव दिन की खुराक में सेब को शामिल करने, दिन में एक बार अदरक की चाय पीने का सुझाव देते हैं। उनके अनुसार प्याज किडनी के लिए बेहद फायदेमंद है। दही किडनी इंफेक्शन ठीक करता है। खानपान संयम के साथ-साथ प्रतिदिन कम से कम एक घंटा हल्का व्यायाम करें। तनाव से बचते हुए पर्याप्त नींद लें। पर्याप्त पानी पिएं। रात्रि भोजन 8 बजे तक ले लें।

यूरिक एसिड नियंत्रित करने के लिए सूक्ष्म व्यायाम यथा मंडूकासन, शशकासन, योगमुद्रासन, भुजंगासन, शलभासन, उत्तानपादासन, पवनमुक्तासन, मर्कटासन, त्रिकोणासन, कटि चक्रासन, वक्रासन, सुप्त वज्रासन, पश्चिमोत्तानासन, उष्ट्रासन, सूर्य नमस्कार, दंड बैठक बहुत लाभकारी है। इनसे थकान नहीं होती है। शरीर में ऊर्जा और स्फूर्ति का संचार होता है।

हास्य प्रसंग

☺ शिक्षक : बताओ Monkey को हिंदी में क्या कहते हैं।

छात्र : बंदर

शिक्षक : किताब से देखकर बोला है न ?

छात्र : नहीं, मैने तो आपको देखकर बोला है।

☺ पंडित जी ने कुंडली मिलाई। 36 के 36 गुण मिल गए। लड़के वालों ने मना कर दिया।

लड़की वाले हैरान हो कर पूछने लगे, जब सारे गुण मिलते हैं तो आप मना क्यों कर रहे हैं ?

लड़के वाले - हमारा लड़का बिल्कुल लफंगा है, अब क्या बहू भी उस जैसी ले आये क्या ?

☺ बच्चा दादी के पास आया और बोला दादी माँ आप टे.... बोल कर दिखाओ टे... फिर से बोलो टे... कितना बढ़िया बोलती हैं। आप मम्मी को क्यों नहीं सुना देतीं। क्या मतलब तेरी मम्मी को क्यों सुनाऊँ ?

☺ महेन्द्र : पापा कल हम मालामाल हो जाएंगे।

पापा : वह कैसे ?

महेन्द्र : हमारे गणित के टीचर पैसे को रुपये में बदलना सिखाएंगे।

☺ टीचर (चिंटू से)- होमवर्क क्यों नहीं किया ?

चिंटू-मैम, मैं जब पढ़ने बैठा तो लाईट चली गई।

टीचर-तो लाइट आने के बाद क्यों नहीं की पढ़ाई ?

चिंटू-बाद में मैंने इस डर से पढ़ने नहीं बैठा कि कहीं मेरी वजह से लाइट न चली जाए।

☺ गोलू-बचपन में माँ की बात सुनी होती तो आज ये दिन ना देखने पड़ते।

मोलू-क्या कहती थी तेरी माँ ?

गोलू-जब बात ही नहीं सुनी तो मुझे क्या पता, क्या कहती थी।

समाचार दर्पण

आर्यसमाज मण्डी बांस मुरादाबाद में आर्यावर्त्त केसरी के संपादक डॉ. अशोक आर्य जी को अध्यात्म पथ पत्रिका भेंट करते हुए आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी।

आर्यसमाज मण्डी बांस के मंत्री आर्य मनोज कुमार रस्तोगी स्पेन द्वारा प्रदत्त डाक्टरेट की उपाधि आचार्य चन्द्रशेखर जी के करकमलों से प्राप्त करते हुए साथ में समाज प्रधान आर्य निर्मल रस्तोगी।

वो टंकारे वाला

प्रस्तुति- अश्विनी नांगिया

कहते हैं ऋषियों का सरताज वो टंकारे वाला।
महाराजाओं का भी महाराजा वो टंकारे वाला।
ऐसा मतवाला योगी।
घर घर में चर्चा होगी।
दुनियाँ में धूम मची है आज। वो टंकारे वाला...
सच्चे शिव का मतवाला।
सब कुछ अर्पण कर डाला।
ईश्वर की करुणा का मुहताज। वो टंकारे वाला....
भटकों को राह दिखाई।
जीवन की शान बढ़ाई।
जन जन के ख़ूब सँवारे काज। वो टंकारे वाला....
नफ़रत के बन्धन तोड़े।
टूटे दिल फिर से जोड़े।
दुखियों की आन बचाई लाज। वो टंकारे वाला....
वेदों की शिक्षा लाया।
सबको पढ़ना सिखलाया।
रच कर के प्यारा आर्य समाज। वो टंकारे वाला ...
जन जन का राजदुलारा।
सबकी अखियों का तारा।
बन आया 'पथिक' हमारा ताज। वो टंकारे वाला...

वैदिक विचारधारा की अत्यन्त लोकप्रिय मासिक पत्रिका 'अध्यात्म पथ' के सदस्य बनकर मानव कल्याण में सहयोग प्रदान करें।

संरक्षक सदस्य - 5100/ रुपये
आजीवन सदस्य - 1100/- रुपये

सम्पर्क सूत्र
अध्यात्म पथ (मासिक)
फ्लैट नं. सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट
(F ब्लाक) विकासपुरी, नई दिल्ली-18
मो.: 9810084806
E-mail : adhyatmapath@yahoo.com

पहचान

श्रीमती पूनम नांगिया

क्यूँ टिकते नही कदम इस जमीं पर
क्यूँ दौड़ती है ख्वाईशें राह से उतर कर
क्यूँ छूते हैं सपने आसमाँ धरती को पार कर
क्यूँ भटक रहा है इसाँ तू अंधकार में
उजाले को महसूस कर.... खुदा में ही
खुद की पहचान कर

क्यूँ भागता रहता है ये मन
क्यूँ इच्छाएं है इतनी चंचल
क्यूँ बह रही है भावानाएँ यूँ मचल कर
क्यूँ सँभलती नही जीवन की नैया
खोज ले किनारा उस खुदा में
खुद की पहचान कर

क्यूँ ठहरता नही इंसा इक डगर पर
क्यूँ पाना चाहता है मंजिल बिन राह के गुजर कर
क्यूँ चढ़ता नहीं सीढ़ी दर सीढ़ी
क्यूँ लाँघता है सीमाएँ बिन पाँव के टिका कर
बस समझ कर आखरी पड़ाव उस खुदा में
खुद की पहचान कर

क्यूँ झूल रहा है कच्चे झूलों पर
क्यूँ फिसल रही है डोर तेरे हाथों से
क्यों सह रहा है दर्द अपनी ही मातों से
क्यों स्वीकारता नहीं इस हकीकत को
उसी खुदा का ही हिस्सा है तू
उस खुदा में खुद की पहचान कर।

अध्यात्म पथ (पंजी.)

कार्यालयः WZ-97, सुन्दर पैलेस, ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

पत्राचार एवं संपादकीय कार्यालयः फ्लैट नं. C-1, पूर्ति अपार्टमेन्ट (F-ब्लॉक) विकासपुरी, नई दिल्ली-18

दूरभाष : 9810084806, 7838915996 **E-mail : adhyatmapath@yahoo.com**

वैदिक विचारधारा की लोकप्रिय मासिक पत्रिका 'अध्यात्म पथ' के यशस्वी सम्पादक आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी के स्वर्ण जयन्ती (50वीं वर्षगांठ) महोत्सव के अवसर पर भव्य विशेषांक हेतु विज्ञापन की अपील

माननीय

सादर नमस्ते!

प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

हर्ष का विषय है कि प्रख्यात युवा वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के स्वर्ण जयन्ती (50वीं वर्षगांठ) महोत्सव के अवसर पर भव्य अभिनन्दन स्मारिका का प्रकाशन अध्यात्म पथ के विशेषांक के रूप में यथाशीघ्र किया जा रहा है। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विद्वान्, चिन्तकों के लेख प्रकाशित किए जाएंगे। प्रस्तुत विशेषांक संग्रहणीय होगा तथा इसमें आचार्य श्री के लेख, विचार, कविताएँ आदि भी रहेंगी। कहने की आवश्यकता नहीं कि विगत 35 वर्षों से शास्त्री जी धर्म, समाजसेवा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार में एकनिष्ठ भाव में संलग्न है। देश में ही नहीं विदेश में भी उन्होंने वैदिक ध्वज को उन्नत किया है।

यह पत्रिका देश-विदेश में अध्यात्म एवं सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों में रचनात्मक और सक्रिय भूमिका निभा रही है। शिक्षा से जुड़े विद्वान भी इसमें संबद्ध है। आर्यसमाज के संदेश को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए एक सशक्त माध्यम है यह अध्यात्म पथ पत्रिका।

कृपया इस विशेषांक के लिए अपनी संस्था एवं आर्यसमाज की ओर से शीघ्र ही विज्ञापन देकर अध्यात्म एवं समाज के विकास में अपना योगदान दें।

आप अपने क्रास चेक/ड्राफ्ट 'अध्यात्म पथ' के नाम से (संपादकीय कार्यालय के पते फ्लैट नं. C-1, पूर्ति अपार्टमेन्ट (F-ब्लॉक) विकासपुरी, नई दिल्ली-18) पर भिजवाकर कृतार्थ करें। आचार्य श्री के सम्बन्ध में लेख, शुभकामना संदेश का भी स्वागत है।

विज्ञापन सामग्री एवं डिजाइन यथाशीघ्र भिजवा देवें।

विज्ञापन की दरें इस प्रकार है।

कवर पृष्ठ 4, फोर कलर	- 31000 रुपये	पूरा पृष्ठ अंदर (श्वेत एवं श्याम)	- 3100 रुपये
कवर पृष्ठ 3, फोर कलर	- 21000 रुपये	आधा पृष्ठ अंदर (श्वेत एवं श्याम)	- 1500 रुपये
कवर पृष्ठ 2, फोर कलर	- 21000 रुपये	फोर कलर में अपना फोटो नाम वह हार्दिक शुभकामनाएं	- 1000 रुपये
भीतर पूरा पृष्ठ फोर कलर	- 5100 रुपये		
अन्दर हाफ पृष्ठ फोर कलर	- 4100 रुपये		

आशा है कि वैदिक, आध्यात्मिक और सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में योगदान देने के लिए आपका विज्ञापन सहयोग अवश्य प्राप्त होगा।

सधन्यवाद!

निवेदकः

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया डी.लिट्
पूर्व प्रो. एवं अध्यक्ष भावनगर यूनिवर्सिटी, (संरक्षक-अध्यात्म-पथ)

यशपाल आर्य
चेयरमैन, शिक्षा समिति (संरक्षक-अध्यात्म-पथ)

ओम सपरा
स्पेशल मेट्रो पोलिटेन मजिस्ट्रेट
साहित्य सम्पादक

प्रिं अरुण आर्य
प्रधान, आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली (संरक्षक-अध्यात्म-पथ)

हीरालाल चावला
उपाध्यक्ष-वेदसंस्थान
(संरक्षक-अध्यात्म-पथ)

डॉ. विनोद बब्बर
सम्पादक-राष्ट्र किंकर
(अतिथि सम्पादक-अध्यात्म-पथ)

अश्विनी कुमार नांगिया
(प्रबन्ध सम्पादक-अध्यात्म-पथ)

सुरिन्द्र चौधरी
मंत्री आर्यसमाज सै.-5, रोहिणी
(अतिथि सम्पादक)

नरेन्द्र आर्य सुमन
प्रधान, आर्यसमाज
रमेश नगर दिल्ली
(अतिथि सम्पादक-अध्यात्म-पथ)

आर्यसमाजों एवं डी.ए.वी. के शिक्षण संस्थाओं से अपील

'अध्यात्म पथ' वैदिक विचार धारा को आगे बढ़ाने वाली लोकप्रिय मासिक पत्रिका है, इसमें आर्यसमाजों एवं आर्य जगत से सम्बद्ध समाचारों को वरीयता दी जाती है।

आत्मोकर्ष दृष्टि से इस पत्रिका का विशिष्ट महत्व है। इसके एक अंक के प्रकाशन पर लगभग 15 हजार रुपये व्यय होते हैं। अपनी उदारता का परिचय देते हुए यदि विभिन्न आर्यसमाज इसके प्रकाशन के एक-एक अंक का व्ययभार वहन कर लें तो पत्रिका निरन्तर प्रकाशित होती रहे।

जो आर्यसमाज एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाएँ किसी एक अंक के प्रकाशन पर सहयोग राशि प्रदान करेगी उस आर्यसमाज एवं शिक्षण संस्था का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उसकी गतिविधियों के 1 पृष्ठ का विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जाएगा। तथा उसे यह पत्रिका नि:शुल्क प्रेषित की जायेगी। आपके सकारात्मक सहयोग की प्रतीक्षा है।

निवेदक

प्रि. अरुण आर्य   श्री अशोक सुनेजा

श्री यशपाल आर्य   श्री अश्विनी नांगिया

सम्पूर्ण जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
फ्लैट नं. सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट
(एफ-ब्लाक), विकासपुरी, नई दिल्ली-18
मो. : 9810084806

परिवार समाज एवं धर्म के उत्थान के लिए चिरन्तन मूल्यों की प्रेरक पत्रिका-

'अध्यात्म पथ' के सदस्य बनें।

सदस्यता शुल्क :

मुख्य संरक्षक	:	रु	21000/-
संरक्षक	:	रु.	5100/-
आजीवन	:	रु	1100/- 10 वर्षों के लिए
पंचवार्षिक	:	रु	500/-
त्रैवार्षिक	:	रु	270/-
द्विवार्षिक	:	रु	190/-
वार्षिक	:	रु	100/-
एक प्रति	:	रु	10/-

विदेश में

आजीवन	:	350 डॉलर, यूरो
वार्षिक	:	20 डॉलर, यूरो

सदस्यता आवेदन पत्र

(नाम, पता तथा पिन कोड, फोन नम्बर, निम्न फार्म में साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।)

नाम .... उम्र .... दिनांक ....

पता ....

शहर .... राज्य .... पिन ....

फोन .... मोबाइल ....

चैक/मनीऑर्डर/डी.डी. नम्बर .... रुपये ....

संरक्षक/ आजीवन/पंचवार्षिक/वार्षिक की सदस्यता हेतु संलग्न है।

भवदीय

चैक/ ड्राफ्ट/ मनीआर्डर 'अध्यात्मपथ' के नाम से अध्यात्म पथ सम्पादकीय कार्यालय,
फ्लैट नं. सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट (एफ-ब्लाक) विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 के पते पर भेजें।

प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी एवं श्रीमती शीला शास्त्री जी के सुपुत्र आ० शाश्वत, आयुष्मती प्राची एवं श्री नरेश वर्मा 'धुरंधर' एवं श्रीमती कल्याणी वर्मा की सुपुत्री आयुष्मती प्रज्ञा के यज्ञोपवीत संस्कार कार्यक्रम की सचित्र झलकियाँ

RNI No/DELMUL/2006/18533 Date of Publication 06-04-23 DL(W)10/2145/2023-2025
Posted at - NIEHO
Date of Posting 10 & 11 April, 2023

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक चन्द्रशेखर शास्त्री द्वारा एक्स्पो प्रिंट एण्ड मीडिया प्रा0 लि0, 97/12, ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली - 63 से मुद्रित तथा अध्यात्म पथ कार्यालय : WZ-97, सुन्दर पैलेस, ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63 से प्रकाशित